अंक 13

अप्रैल–सितम्बर 2025

यूको उत्कर्ष

छमाही पत्रिका

"हिन्दी पखवाड़ा विशेषांक"

विशेष कवरेज

- बैंक के मुख्य अभियान
- अंचल की गतिविधियाँ
- छमाही के टॉप परफ़ॉर्मर
- चुनिंदा लेख
- कवितायें

यूको बैंक (भारत सरकार का उपक्रम) सम्मान आपके विश्वास का

UCO BANK (A Govt. of India Undertaking) Honours Your Trust

अंचल कार्यालय, करनाल

यूको उत्कर्ष

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री का संदेश	1-2
2.	प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश	3
3.	अंचल प्रमुख का संदेश	4
4.	उप–अंचल प्रमुख का संदेश	5
5.	संपादक की कलम से	6
6.	हमारा विजन	7
7.	बैंक में मानव संसाधन प्रबंधन की भूमिका	8-11
8.	एमएसएमई एवं कृषि कर्निवल	12
9.	एमएसएमई एवं कृषि कर्निवल के चित्र	13
10.	पुस्तक पढ़ना	14-16
11.	शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक	17
12.	समीक्षा बैठक में सम्मानित	18
13.	डिजिटल फास्टिंग	19-21
14.	एमएसएमई एवं कृषि कर्निवल	22
15.	डिजिटल अरेस्ट : एक बढ़ता साइबर धोखा	23-25
16.	छमाही में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शाखाएं	26-27
17.	कर्ण : महाभारत का विलक्षण नायक	28-30
18.	राष्ट्रीय खेल दिवस पर कार्यक्रम	31-32
19.	स्वतंत्रता दिवस समारोह	33
20.	पुस्तक समीक्षा	34-35
21.	सर्दियों में सेहत	36-38
22.	बाजरे की खिचड़ी	39-40
23.	पेड़ का आखिरी गीत : कविता	41
24.	ज़िंदगी के पड़ाव	42
25.	बीसी की समीक्षा बैठक	43-44
26.	कासा कैंप के चित्र	45-46
27.	डिपॉजिट मोबिलाइजेशन	47-48
28.	एक्सपोर्टर मीट	49-50
29.	यूको जी.डी. बिड़ला व्याख्यानमाला	51-52
30.	हिंदी पखवाड़ा–2025	53-54
31.	बालों की देखभाल पर कार्यक्रम	55
32.	अंचल में जन्मदिवस	56

अभिषेक सिंह
अंचल प्रमुख

प्रेरणा
अविनाश पाण्डेय
उप–अंचल प्रमुख

दिग्दर्शन
एकाग्र प्रकाश त्यागी
मुख्य प्रबन्धक

अभिजीत कुमार
मुख्य प्रबन्धक

चन्दन कुमार
मुख्य प्रबन्धक

प्रिया शर्मा
मुख्य प्रबन्धक

संपादक
रितेश कुमार
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मण्डल
किरणदीप कौर
वरिष्ठ प्रबन्धक

कृष्ण कांत
प्रबन्धक

वर्षा शाही
वरिष्ठ प्रबन्धक

वंदना शर्मा
प्रबन्धक

अजय श्योराण
वरिष्ठ प्रबन्धक

राशि
सहायक प्रबन्धक

सत्यमेव जयते

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय यूकोजन,

आप सभी को हिंदी दिवस - 2025 की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ !

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि वह जीवंत चेतना है जो राष्ट्र की आत्मा को स्वर देती है। इसी चेतना की स्वर्णिम उपलब्धि के रूप में राजभाषा हिंदी हमारी संस्कृति, संस्कार और अस्मिता को आलोकित करते हुए जन-जन के हृदय को जोड़ने वाला वह सेतु बन चुका है, जिस पर भारत विकास के सोपानों को सहजता से पार कर रहा है। हिंदी ने अपनी परंपराओं को सँजोते हुए अन्य भाषाओं के रत्नों को आत्मसात कर एक बहुरंगी गंगा-जमुनी संस्कृति का निर्माण किया है।

संघ की राजभाषा नीति के प्रति यूको बैंक की प्रतिबद्धता एक सुदीर्घ साधना है, जो वर्ष 1974 से निरंतर हिंदी के अनुशासित अनुपालन में अभिव्यक्त हो रही है। भारत सरकार द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों से प्रतिवर्ष सम्मानित होना हमारी उसी निष्ठा का प्रमाण है। हमें गर्व है कि इस वर्ष हमारी हिंदी गृह पत्रिका "यूको अनुगूँज" को 'ग' क्षेत्र की सर्वोत्कृष्ट पत्रिका के रूप में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) तथा नराकास (बैंक) कोलकाता को नराकास राजभाषा सम्मान (द्वितीय) से अलंकृत किया गया है। साथ ही, हमारे 8 नराकासों में से 6 नराकासों का उत्कृष्ट प्रदर्शन, यूको बैंक की सामूहिक भाषायी चेतना का दर्पण है। इन विजयी नराकासों के अध्यक्षों एवं सदस्य सचिवों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस उपलब्धि को समस्त यूकोजन को समर्पित करता हूँ, जिन्होंने हिंदी को केवल भाषा नहीं, कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने में महती भूमिका निभाई है।

राजभाषा हिंदी केवल कार्य की भाषा नहीं, हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति है। यूको बैंक परिवार का प्रत्येक सदस्य इसके अनुपालन में पूर्ण समर्पण और तन्मयता से जुड़ा है। प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार के माध्यम से हम न केवल हिंदी को कार्यालयीन जीवन में सहज बना रहे हैं, बल्कि तकनीकी नवाचारों के साथ उसे आधुनिक कार्य संस्कृति में भी आत्मसात कर चुके हैं। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर मेरी यह अपेक्षा है कि सभी कार्मिक **हिंदी को केवल नियम नहीं, नियमित व्यवहार बनाएं**, क्योंकि हिंदी का सम्मान, राष्ट्र का सम्मान है।

हिंदी को जनमानस की भाषा बनाने के लिए हमें दृढ़-संकल्प होकर कार्य करना होगा। यह सिर्फ सरकारी कार्यालयों की भाषा नहीं बनें अपितु हमारे देश की आम जनता के लिए **सरल, सुलभ और सुग्राही भाषा** बनें। इसके लिए हमें न केवल हिंदी को अपनाना है, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी सम्मान और जिज्ञासा बनाए रखनी होगी। जब हम भाषाएँ सीखते हैं, तो संस्कृति से संवाद, सभ्यता से साक्षात्कार और समाज से आत्मीयता स्वतः जुड़ जाती है। जब हम भाषाओं का सम्मान करते हैं, तो हम संबंधों का विस्तार करते हैं और यही शक्ति भारत को एकसूत्र में पिरोती है।

हिंदी दिवस-2025 के इस पावन अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि कार्यालय का प्रत्येक कार्य राजभाषा हिंदी में पूर्ण तन्मयता और निष्ठा के साथ संपन्न करें। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम का अक्षरशः अनुपालन हमारी भाषायी प्रतिबद्धता का प्रतीक बने। प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हम न केवल प्रतिभा को मंच देंगे, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साह, प्रेरणा और सकारात्मकता का वातावरण भी निर्मित करेंगे। आइए, हम सब मिलकर इसे अपने कर्म की भाषा बनाएं, हृदय से हिंदी अपनाएँ — यही सच्चा राष्ट्र सम्मान है।

अश्वनी कुमार

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय साथियों,

सप्रेम नमस्कार!

यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि अंचल कार्यालय, करनाल द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा बैंकिंग गतिविधियों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से "यूको उत्कर्ष" ई-पत्रिका का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि करनाल अंचल की यह पत्रिका न केवल अंचल के कार्यों एवं उपलब्धियों का सशक्त प्रस्तुतीकरण करेगी, बल्कि स्टाफ सदस्यों के विचारों, अनुभवों और उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति को भी एक प्रेरणादायक मंच प्रदान करेगी।हमारा बैंक सदैव ग्राहकों के हित, सामाजिक सरोकारों और आर्थिक उन्नति के लिए प्रतिबद्ध रहा है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में हमें बेहतर ग्राहक सेवा, तकनीकी नवाचार और पारदर्शिता के लक्ष्य के साथ कार्य करना अत्यंत आवश्यक है। बैंक निरंतर प्रयासरत है कि हम अपने ग्राहकों को आधुनिक, सरल और सहज बैंकिंग सुविधाएँ उपलब्ध कराएँ। डिजिटल बैंकिंग, त्वरित सेवाओं तथा ग्राहक-केंद्रित समाधानों को अपनाकर बैंक निरंतर परिवर्तन को आत्मसात कर रहा है, जिससे हमारे ग्राहकों को श्रेष्ठ एवं सुविधाजनक बैंकिंग अनुभव प्राप्त हो सके। हमारे ग्राहकों का अटूट विश्वास ही हमें "भरोसे का प्रतीक" बनाता है और यही विश्वास हमें उत्कृष्टता के साथ अपने दायित्वों के निर्वहन के लिए प्रेरित करता है।ई-पत्रिका प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य स्टाफ सदस्यों के साथ संवाद का एक जीवंत, सकारात्मक और रचनात्मक माध्यम स्थापित करना है। मुझे पूर्ण आशा है कि यह ई-पत्रिका राजभाषा हिंदी के संवर्द्धन के साथ-साथ स्टाफ की रचनात्मकता, मौलिक सोच और अभिव्यक्ति को ऊर्जा प्रदान करेगी तथा सभी सहयोगियों को एकजुट करने का प्रभावी साधन बनेगी।मैं अंचल प्रमुख, संपादकीय टीम, लेखकों तथा पत्रिका से जुड़े सभी सहयोगियों को "यूको उत्कर्ष" के प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।ईश्वर से कामना है कि यह पत्रिका निरंतर नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करती रहे और अंचल की उपलब्धियों एवं सृजनात्मकता का गौरवपूर्ण दर्पण बनी रहे।

अभिषेक सिंह
अंचल प्रमुख
अंचल कार्यालय, करनाल

उप–अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय साथियों
सप्रेम नमस्कार।

मुझे यूको उत्कर्ष के इस नवीन अंक के माध्यम से आप सभी के साथ संवाद स्थापित करने का अवसर पाकर अत्यंत हर्ष हो रहा है। हमारी पत्रिका को स्टाफ सदस्यों द्वारा लगातार भेजी जाने वाली रचनाएँ लेख, कविताएँ, कहानियाँ, संस्मरण न केवल उनकी भाषिक अभिरुचि को दर्शाती हैं, बल्कि हिन्दी के प्रति उनके लगाव और रचनात्मकता को भी उजागर करती हैं। आप सबकी यह सहभागिता अत्यंत सराहनीय है।वर्तमान समय तकनीक का युग है। आज हम जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में तकनीकी सेवाओं पर निर्भर हो चुके हैं, और बैंकिंग क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। प्रतिदिन नई-नई तकनीकें हमारे कार्य-प्रणालियों में शामिल हो रही हैं। आज बिना तकनीक के बैंकिंग सेवाओं और सुविधाओं की कल्पना भी संभव नहीं है। इसी तकनीकी प्रगति के अनुरूप हमें हिन्दी के उपयोग को भी बढ़ावा देना चाहिए, ताकि आधुनिक बैंकिंग में हमारी राजभाषा का प्रभावी व सहज उपयोग सुनिश्चित किया जा सके।बैंक ने ग्राहकों की सुविधा हेतु नेट बैंकिंग से लेकर मोबाइल बैंकिंग तक अनेकों सेवाओं का डिजिटलीकरण किया है। परंतु डिजिटल सेवाओं के बढ़ते उपयोग के साथ साइबर अपराधों में भी वृद्धि हुई है। ऐसी स्थिति में हम सभी की जिम्मेदारी है कि स्वयं भी सतर्क रहें और अपने ग्राहकों को भी जागरूक करें। सुरक्षा संबंधी जानकारी और मार्गदर्शन प्रदान करना आज हमारी महत्त्वपूर्ण प्राथमिकताओं में शामिल होना चाहिए। सुरक्षित बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करना और ग्राहकों के हितों की रक्षा करना हमारा नैतिक एवं व्यावसायिक दायित्व है।हमारे डिजिटल उत्पादों से संबंधित सभी विशेषताओं, सुरक्षा उपायों और सावधानियों की पूर्ण जानकारी ग्राहकों तक पहुँचाना अत्यंत आवश्यक है। तकनीकी रूप से सक्षम होने के साथ-साथ हमें यह भी सुनिश्चित करना है कि ग्राहक इन सुविधाओं का सुरक्षित रूप से उपयोग कर सकें।आज की तकनीकी व्यवस्था ने हिन्दी के प्रयोग को भी अत्यंत सरल बना दिया है। अब आवश्यकता केवल हमारे संकल्प और संयुक्त प्रयासों की है। राजभाषा के प्रोत्साहन के लिए भारत सरकार द्वारा राजभाषा अधिनियम 1963 और राजभाषा नियम 1976 लागू किए गए हैं। इनका अनुपालन सुनिश्चित करना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। राजभाषा हिन्दी का विकास किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि सभी के संयुक्त प्रयासों का परिणाम होता है।मुझे पूर्ण विश्वास है कि यूको उत्कर्ष का यह अंक भी पिछली तरह आप सभी को निश्चय ही पसंद आएगा और ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा।

सादर

अविनाश पाण्डेय
उप अंचल प्रमुख
यूको बैंक, अंचल कार्यालय करनाल

संपादक की कलम से

प्रिय पाठकों,
सस्नेह नमस्कार।

आप सभी को मेरा सादर अभिवादन तथा हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। अप्रैल - सितंबर छमाही के इस विशेष अंक में आप सभी का स्वागत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता और गौरव का अनुभव हो रहा है।हाल ही सम्पन्न हिन्दी पखवाड़ा में आप सभी की उल्लेखनीय सहभागिता ने यह सिद्ध कर दिया है कि हिन्दी भाषा के प्रति आपका स्नेह, सम्मान और समर्पण अटूट है। हमें पूर्ण विश्वास है कि राजभाषा हिन्दी के सतत् संवर्धन और प्रसार में आपका सहयोग भविष्य में भी इसी प्रकार मिलता रहेगा। उन सभी स्टाफ सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद, जो निरंतर रचनाएँ, लेख, कविताएँ और सृजनशील सामग्री प्रेषित कर "यूको उत्कर्ष" पत्रिका को समृद्ध करते रहे हैं। आपसे विनम्र अनुरोध है कि अपने सहकर्मियों को भी लेखन के लिए प्रेरित करें, ताकि यह गृह पत्रिका और अधिक जीवंत, बहुपयोगी तथा ज्ञानवर्धक बन सके। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका न केवल आपके ज्ञान-विस्तार में सहायक सिद्ध होगी, बल्कि आपके साहित्यिक, सांस्कृतिक और रचनात्मक अभिरुचियों को भी प्रोत्साहित करेगी। आगामी अंकों के लिए आप सभी से अपेक्षा है कि अधिक से अधिक रचनात्मक सामग्री जैसे स्वरचित लेख, कविताएँ, कहानियाँ, संस्मरण, पर्यटन अनुभव, स्वास्थ्य संबंधी सुझाव, व्यंजन विधियाँ आदि निरंतर भेजते रहें। साथ ही, अपने शाखा/कार्यालय में आयोजित व्यावसायिक गतिविधियों की जानकारी एवं फ़ोटो भी राजभाषा विभाग को प्रेषित करें, ताकि उन्हें पत्रिका के आगामी अंकों में समुचित स्थान प्रदान किया जा सके। पत्रिका के स्तर को और उत्कृष्ट बनाने हेतु यदि आपके पास कोई सुझाव या सुधार हो, तो कृपया हमें zoharyana.ol@uco.bank.in पर अवश्य लिखें। आपकी हर प्रतिक्रिया हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान है।

स्नेह एवं शुभकामनाओं सहित

रितेश कुमार
प्रबंधक (राजभाषा)
यूको बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल

हमारा विज़न

"एक ऐसी विश्वस्तरीय वित्तीय संस्था के रूप में सामने आना जो अत्यंत विश्वस्त और प्रशंसनीय हो तथा जिसे प्रत्येक ग्राहक व निवेशक बहुत पसंद करता हो और जिस पर उसके कर्मचारियों को गर्व हो"

OUR VISION

"To emerge as the most trusted, admired and sought after world class financial institution and to be the most preferred destination for every customer and investor and place of pride for its employees."

बैंकों में मानव संसाधन प्रबन्धन की भूमिका

मानव संसाधन प्रबंधन का अर्थ कर्मचारियों के उचित नियोजन से है, जिसमें उनके हितों की रक्षा के साथ-साथ उनकी क्षमता का सही उपयोग भी शामिल होता है। मानव-बल किसी भी बैंक का अत्यंत महत्वपूर्ण संसाधन है। उसका बेहतर नियोजन, समय के साथ उसकी क्षमताओं का विकास, कर्मचारियों को उपयुक्त अवसर और बेहतर जीवनशैली उपलब्ध कराना तथा उनके हितों की सुरक्षा करना, ये सभी कार्य मानव संसाधन प्रबंधन के अंतर्गत आते हैं।

एक मानव संसाधन प्रबंधन अधिकारी का प्रमुख कर्तव्य अपने कर्मचारियों को संतुष्ट रखना होता है। उसे ऐसे निर्णय लेने होते हैं जो संस्थान और कर्मचारियों दोनों के लिए लाभदायक हों। इस प्रकार मानव संसाधन प्रबंधन में अधिकारी को कर्मचारियों का हितैषी बनकर उनके अधिकारों के प्रति सजग रहना पड़ता है। इस दृष्टि से कर्मचारी भी संस्थान के आंतरिक उपभोक्ता माने जाते हैं, इसलिए बिना किसी भेदभाव के उनके हितों और अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक होता है।

एक सक्षम मानव संसाधन अधिकारी के लिए वाक्पटु होना अत्यंत आवश्यक है, ताकि वह अपनी बात स्पष्ट रूप से उच्चाधिकारियों तक पहुँचा सके। उसमें सही और गलत का निर्णय करने की योग्य क्षमता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि किसी शाखा में कर्मचारियों के बीच मतभेद उत्पन्न हो जाए, तो यह आवश्यक है कि वह सबसे पहले मतभेदों का वास्तविक कारण जाने। उसे दोनों पक्षों की बात निष्पक्षता के साथ, बिना किसी पूर्वधारणा के सुननी चाहिए। इसके पश्चात उपलब्ध तथ्यों और परिस्थितियों का न्यायसंगत विश्लेषण करते हुए अधिकारियों के समक्ष जानकारी प्रस्तुत करनी चाहिए।

इस प्रकार मामले को समझने के बाद ऐसा निर्णय लिया जाना चाहिए जिससे सही पक्ष को न्याय मिल सके और गलत करने वाले को सुधार का मार्ग दिखाया जा सके। निर्णय लेते समय यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि कार्यालय का वातावरण प्रभावित न हो और अन्य कर्मचारी निर्बाध रूप से अपना कार्य करते रहें। मानव संसाधन प्रबंधन का मूल भाव यही है कि जब कर्मचारी संतुष्ट रहते हैं, तभी संस्था प्रगति करती है और कर्मचारियों की उन्नति भी सुनिश्चित होती है। संस्थान और कर्मचारियों के बीच

समन्वय स्थापित करके चलना मानव संसाधन अधिकारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

बैंकिंग क्षेत्र में मानव संसाधन प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि कर्मचारियों को भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किया जाए। इसी उद्देश्य से उनकी क्षमता के अनुसार उन्हें प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। प्रशिक्षण व्यवस्था करते समय यह देखा जाता है कि वर्तमान में कर्मचारी जिस पद पर कार्यरत है या आगे जिस पद के लिए उसकी आवश्यकता पड़ सकती है, वह उसके अनुरूप दक्ष हो सके। अतः सही समय पर सही व्यक्ति को सही स्थान पर नियुक्त करना मानव संसाधन प्रबंधन का प्रमुख दायित्व है। इस प्रकार मानव संसाधन प्रबंधन कर्मचारियों के कौशल को पहचानकर उसे विकसित करने का कार्य करता है, ताकि कर्मचारी अपनी दक्षता से बैंक के विकास में योगदान दे सकें। यहाँ कौशल का अर्थ केवल अधिकारियों तक सीमित नहीं है, बल्कि लिपिकीय एवं अधीनस्थ कर्मचारी भी बैंक के व्यवसाय को आगे बढ़ाने में समान रूप से योगदान देते हैं।

मानव संसाधन अधिकारी को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि शाखा प्रबंधक की नियुक्ति करते समय ऐसा व्यक्ति चुना जाए जो बैंक की उन्नति और लाभ को प्राथमिकता देते हुए साथ-साथ कर्मचारियों को संतुष्ट रख सके। टीमवर्क बैंकिंग का मूल आधार है, अतः कर्मचारियों को यह समझाना आवश्यक है कि सभी मिलकर एक टीम के रूप में कार्य करें और कठिन परिस्थितियों में भी एक-दूसरे का सहयोग बनाए रखें। कर्मचारियों की समस्याएँ धैर्य और संवेदनशीलता के साथ सुनना आवश्यक है, ताकि उन्हें यह विश्वास रहे कि बैंक में ऐसा प्रबंधन है जिसके साथ वे अपनी समस्याएँ निःसंकोच साझा कर सकते हैं और जिसका समाधान भी किया जाएगा। कई बार मात्र अपनी बात कह पाने से ही कर्मचारियों का तनाव काफी कम हो जाता है।

बैंकिंग एक सेवा-प्रधान क्षेत्र है, इसलिए मानव संसाधन प्रबंधन का महत्व इससे कहीं अधिक बढ़ जाता है। यहाँ लोगों को संभालना, उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरना और आर्थिक-वित्तीय चुनौतियों का सामना करते हुए कार्य करना एक कठिन प्रक्रिया है। इसलिए यह आवश्यक है कि कर्मचारी सक्षम, प्रशिक्षित और कौशलयुक्त हों। अनेक शाखाओं में देखा गया है कि अधीनस्थ कर्मचारी भी खाते खोलने, लक्ष्य पूरा करने तथा ऋण वसूली जैसे कार्यों में महत्वपूर्ण

सहयोग देते हैं। मानव संसाधन अधिकारी को ऐसे कर्मचारियों की पहचान रखनी चाहिए और समय-समय पर उनका उत्साहवर्धन करना चाहिए, ताकि वे निरंतर बैंक के कार्यों में सक्रिय योगदान देते रहें।

ग्राहक संतुष्टि बैंकिंग व्यवसाय की नींव है। इसलिए ऐसे कर्मचारियों का चयन अत्यंत आवश्यक है जिनमें सेवा भाव, सौहार्दपूर्ण व्यवहार, मिलनसारिता और बैंकिंग उत्पादों का ज्ञान हो। कर्मचारी बैंक का आईना होते हैं और उनके व्यवहार से ही ग्राहक बैंक की गुणवत्ता का अनुभव कर लेता है। इस प्रकार सही व्यक्तियों को ग्राहक सेवा से संबंधित पदों पर तैनात करना मानव संसाधन अधिकारी की जिम्मेदारी है।

कर्मचारियों की नियुक्ति में मानव संसाधन प्रबंधन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह आंकना अत्यंत आवश्यक है कि संस्था के किस विभाग में कितने कर्मचारियों की आवश्यकता है, क्योंकि भर्ती से लेकर चयन तक की संपूर्ण प्रक्रिया समय और वित्तीय संसाधनों की मांग करती है। इसीलिए नियुक्ति तभी की जानी चाहिए जब वास्तविक आवश्यकता हो तथा पूरी प्रक्रिया योजनाबद्ध तरीके से संपन्न हो।

आज बैंकिंग क्षेत्र में मानव संसाधन प्रबंधन अधिकारी के सामने एक नई चुनौती यह है कि पुरानी एवं नई पीढ़ी के कर्मचारियों के बीच समन्वय स्थापित किया जाए। पुरानी पीढ़ी का अनुभव और नई पीढ़ी की ऊर्जा दोनों अनमोल हैं। इसलिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि दोनों पीढ़ियाँ परस्पर सहयोग और तालमेल से कार्य करें, जिससे बैंक निरंतर सफलता की ओर बढ़ सके। मानव संसाधन अधिकारी का दायित्व है कि वह दोनों पीढ़ियों के कर्मचारियों में सौहार्द और टीम भावना को बनाए रखे।

कर्मचारियों का समय-समय पर मूल्यांकन भी मानव संसाधन प्रबंधन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। पूरे वर्ष अच्छे कार्य करने वाले कर्मचारी का मूल्यांकन सकारात्मक होना चाहिए और जिन कर्मचारियों में सुधार की आवश्यकता है, उनकी उचित काउंसलिंग की जानी चाहिए। यह आवश्यक है कि हर कर्मचारी का मूल्यांकन उसके कार्य एवं प्रदर्शन के आधार पर निष्पक्ष रूप से किया जाए।

मानव संसाधन अधिकारी का यह कर्तव्य भी है कि वह बैंक के हितों को ध्यान में रखते हुए कर्मचारियों के मनोबल को मजबूत बनाए रखे। बैंक में विभिन्न प्रेरणात्मक कार्यक्रम, जैसे “अनुभूति कार्यक्रम”,

जिसमें हर माह उत्कृष्ट कर्मचारी का चयन किया जाता है; "फन आवर", जिसमें कर्मचारी आपस में घुल-मिलकर तनावमुक्त वातावरण में समय व्यतीत करते हैं; तथा विभिन्न सांस्कृतिक और खेलकूद प्रतियोगिताएँ कर्मचारियों के मनोबल को बढ़ाने में सहायक होती हैं। इन कार्यक्रमों में कर्मचारियों की भागीदारी से उनमें सकारात्मकता, टीम भावना और संस्थान के प्रति लगाव बढ़ता है।

सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों के प्रति संवेदनशील होना भी मानव संसाधन प्रबंधन की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। उनके सभी आवश्यक कार्यों को पूरा कराना, प्रशिक्षण देना, उनकी समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करना और उन्हें यह अनुभव कराना कि वे आज भी बैंक परिवार का हिस्सा हैं इन सबमें मानव संसाधन विभाग का महत्वपूर्ण योगदान होता है। सेवानिवृत्ति के बाद भी उनकी सेवाओं के अनुभव का लाभ लेना बैंक के लिए अत्यंत उपयोगी होता है। कोरोना महामारी जैसी आपदा के दौरान मानव संसाधन प्रबंधन की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। एक ओर कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना, तो दूसरी ओर बैंक की आवश्यक सेवाओं को निर्बाध रूप से जारी रखना दोनों अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य हैं। ऐसे समय में कर्मचारियों को सुरक्षा उपायों, स्वास्थ्य संबंधी सावधानियों, ग्राहकों के साथ सुरक्षित व्यवहार तथा जोखिम प्रबंधन संबंधी प्रशिक्षण देना बेहद आवश्यक होता है, ताकि वे स्वयं, अपने परिवार तथा ग्राहकों की सुरक्षा कर सकें।

जैसे-जैसे बैंकिंग का स्वरूप बदला है, वैसे-वैसे मानव संसाधन प्रबंधन भी आधुनिक, पारदर्शी और तकनीक संचालित हो गया है। आज के व्यस्त और तनावपूर्ण जीवन में कर्मचारियों को तनावमुक्त रखना भी बैंक की जिम्मेदारी है। इसलिए मानव संसाधन विभाग विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं तथा सकारात्मक कार्य-संस्कृति के माध्यम से कर्मचारियों को मानसिक रूप से स्वस्थ और उत्साहित रखकर संस्थान के लक्ष्यों को प्राप्त करने में योगदान देता है।

किरणदीप कौर
वरिष्ठ प्रबंधक
यमुना नगर शाखा

एमएसएमई एवं कृषि कार्निवल

यूको बैंक अंचल कार्यालय, करनाल द्वारा दिनांक 09 मई 2025 को एमएसएमई एवं कृषि कार्निवल का आयोजन सोनीपत में किया गया। यह आयोजन बैंक की विकासशील योजनाओं, ग्राहकों से सीधा संवाद, और कृषि एवं एमएसएमई क्षेत्र को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह उनके साथ उप अंचल प्रमुख श्री अविनाश पाण्डेय, मुख्य प्रबंधक श्री चन्दन कुमार चौधरी, एवं अंचल कार्यालय करनाल एवं शाखाओं से आए अन्य स्टाफ सदस्य भी उपस्थित रहे। इस आयोजन की गरिमा उस समय और अधिक बढ़ गई जब प्रधान कार्यालय से पधारे आदरणीय श्री मनीष कुमार जी ने अपनी विशेष उपस्थिति दर्ज कराई। उनके कर-कमलों द्वारा इस कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ और उनके प्रेरणादायक विचारों ने उपस्थित जनसमूह को अत्यंत प्रेरित किया।

कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत आदरणीय श्री मनीष कुमार को पुष्पगुच्छ एवं स्मृति चिन्ह स्वरूप पुस्तक भेंट कर की गई।

इस अवसर पर विभिन्न शाखाओं से आमंत्रित सम्माननीय ग्राहकगण, सेवानिवृत्त कर्मचारी, एवं शाखा प्रमुख विशेष रूप से उपस्थित रहे। ग्राहकों ने यूको बैंक के साथ अपने वर्षों पुराने संबंधों, सेवाओं और अनुभवों को साझा किया, जो सभी के लिए अत्यंत प्रेरणास्पद रहे। इन अनुभवों ने यह सिद्ध किया कि यूको बैंक न केवल वित्तीय संस्थान है, बल्कि ग्राहकों के विश्वास का प्रतीक भी है।

कार्यक्रम में एमएसएमई एवं कृषि क्षेत्र से जुड़ी योजनाओं पर भी विस्तृत चर्चा हुई। बैंक अधिकारियों द्वारा सरल ऋण प्रक्रियाओं एवं ग्राहक सहायता कार्यक्रमों की जानकारी दी गई और उनके प्रश्नों का समाधान भी दिया। इस आयोजन ने बैंक और ग्राहकों के बीच विश्वास एवं संबंधों को और अधिक मजबूत किया।

एमएसएमई एवं कृषि कार्निवल के दौरान लिए गए चित्र

पुस्तक पढ़ना

पुस्तक पढ़ना मनुष्य की बौद्धिक, मानसिक और भावनात्मक उन्नति का सबसे सरल और प्रभावी साधन माना जाता है। जब कोई व्यक्ति पुस्तकें पढ़ता है, तो वह केवल शब्दों को नहीं पढ़ रहा होता, बल्कि एक नई दुनिया में प्रवेश करता है जहाँ ज्ञान, अनुभव, कल्पना और विचारों के असंख्य द्वार खुलते जाते हैं। पुस्तकें मनुष्य की सोच को विस्तार देती हैं और उसे इस विशाल संसार को नए दृष्टिकोण से समझने में मदद करती हैं। पढ़ने की यह प्रक्रिया धीरे-धीरे मनुष्य के व्यक्तित्व को तराशती है और उसे अधिक समझदार, संवेदनशील तथा परिपक्व बनाती है।

बचपन से ही जब बच्चे पुस्तकों से परिचित होते हैं, तब उनमें जिज्ञासा, कल्पनाशक्ति और सीखने की क्षमता बढ़ती है। कहानी की किताबें बच्चों को सपनों के संसार में ले जाती हैं, जहाँ वे नायक-नायिकाओं के साहस और संघर्ष से प्रेरित होते हैं। दूसरी ओर, बड़े होने पर जब व्यक्ति ज्ञान-विज्ञान, इतिहास, मनोविज्ञान या जीवनी जैसी किताबें पढ़ता है, तो उसका दृष्टिकोण व्यापक होता जाता है। वह जीवन, समाज और मनुष्य के व्यवहार को गहराई से समझने लगता है। इस प्रकार, पुस्तकों का प्रभाव किसी एक आयु या वर्ग तक सीमित नहीं रहता; वे जीवन भर मनुष्य के साथ चलने वाली उसकी सबसे विश्वसनीय साथी होती हैं।

पुस्तक पढ़ने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह हमारे मस्तिष्क को सक्रिय और जागरूक बनाए रखता है। जैसे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम आवश्यक है, उसी प्रकार मस्तिष्क को स्वस्थ और तेज रखने के लिए पढ़ना जरूरी है। पढ़ने से स्मरणशक्ति मजबूत होती है, शब्दावली बढ़ती है, और मनुष्य की अभिव्यक्ति क्षमता में निखार आता है। व्यक्ति अपने विचार स्पष्ट और व्यवस्थित रूप से व्यक्त करना सीखता है। इसके साथ ही पढ़ने से व्यक्ति के भीतर धैर्य, एकाग्रता और आत्म-अनुशासन बढ़ता है, क्योंकि पुस्तक पढ़ते समय मन को एक दिशा में केंद्रित करना पड़ता है।

आज की तेज़-तर्रार और तकनीकी दुनिया में लोग मोबाइल, टीवी और सोशल मीडिया में इतने व्यस्त हो गए हैं कि पुस्तक पढ़ने की आदत कम होती जा रही है। लेकिन यह सत्य है कि डिजिटल साधन हमें त्वरित जानकारी तो दे सकते हैं, परंतु गहराई से सोचने, समझने और विश्लेषण करने की क्षमता केवल पुस्तकों से ही विकसित होती है। पुस्तकें हमें

पुस्तक पढ़ना मनुष्य की बौद्धिक, मानसिक और भावनात्मक उन्नति का सबसे सरल और प्रभावी साधन माना जाता है। जब कोई व्यक्ति पुस्तकें पढ़ता है, तो वह केवल शब्दों को नहीं पढ़ रहा होता, बल्कि एक नई दुनिया में प्रवेश करता है जहाँ ज्ञान, अनुभव, कल्पना और विचारों के असंख्य द्वार खुलते जाते हैं। पुस्तकें मनुष्य की सोच को विस्तार देती हैं और उसे इस विशाल संसार को नए दृष्टिकोण से समझने में मदद करती हैं। पढ़ने की यह प्रक्रिया धीरे-धीरे मनुष्य के व्यक्तित्व को तराशती है और उसे अधिक समझदार, संवेदनशील तथा परिपक्व बनाती है।

बचपन से ही जब बच्चे पुस्तकों से परिचित होते हैं, तब उनमें जिज्ञासा, कल्पनाशक्ति और सीखने की क्षमता बढ़ती है। कहानी की किताबें बच्चों को सपनों के संसार में ले जाती हैं, जहाँ वे नायक-नायिकाओं के साहस और संघर्ष से प्रेरित होते हैं। दूसरी ओर, बड़े होने पर जब व्यक्ति ज्ञान-विज्ञान, इतिहास, मनोविज्ञान या जीवनी जैसी किताबें पढ़ता है, तो उसका दृष्टिकोण व्यापक होता जाता है। वह जीवन, समाज और मनुष्य के व्यवहार को गहराई से समझने लगता है। इस प्रकार, पुस्तकों का प्रभाव किसी एक आयु या वर्ग तक सीमित नहीं रहता; वे जीवन भर मनुष्य के साथ चलने वाली उसकी सबसे विश्वसनीय साथी होती हैं।

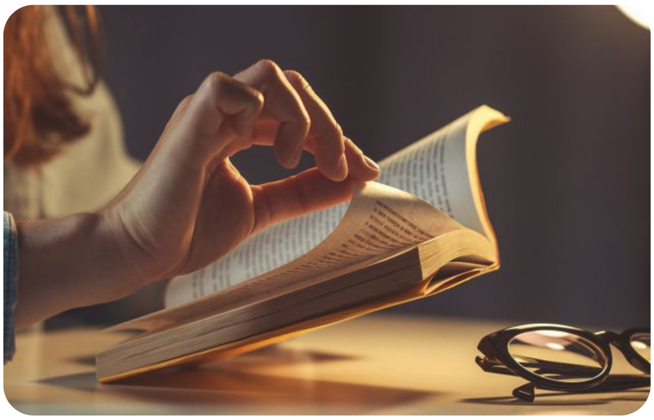

पुस्तक पढ़ने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह हमारे मस्तिष्क को सक्रिय और जागरूक बनाए रखता है। जैसे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम आवश्यक है, उसी प्रकार मस्तिष्क को स्वस्थ और तेज रखने के लिए पढ़ना जरूरी है। पढ़ने से स्मरणशक्ति मजबूत होती है, शब्दावली बढ़ती है, और मनुष्य की अभिव्यक्ति क्षमता में निखार आता है। व्यक्ति अपने विचार स्पष्ट और व्यवस्थित रूप से व्यक्त करना सीखता है। इसके साथ ही पढ़ने से व्यक्ति के भीतर धैर्य, एकाग्रता और आत्म-अनुशासन बढ़ता है, क्योंकि पुस्तक पढ़ते समय मन को एक दिशा में केंद्रित करना पड़ता है।

आज की तेज़-तर्रार और तकनीकी दुनिया में लोग मोबाइल, टीवी और सोशल मीडिया में इतने व्यस्त हो गए हैं कि पुस्तक पढ़ने की आदत कम होती जा रही है। लेकिन यह सत्य है कि डिजिटल साधन हमें त्वरित जानकारी तो दे सकते हैं, परंतु गहराई से सोचने, समझने और विश्लेषण करने की क्षमता केवल पुस्तकों से ही विकसित होती है। पुस्तकें हमें तथ्यों के साथ-साथ जीवन जीने की कला भी सिखाती हैं। वे हमारे भीतर

पुस्तक पढ़ना मनुष्य की बौद्धिक, मानसिक और भावनात्मक उन्नति का सबसे सरल और प्रभावी साधन माना जाता है। जब कोई व्यक्ति पुस्तकें पढ़ता है, तो वह केवल शब्दों को नहीं पढ़ रहा होता, बल्कि एक नई दुनिया में प्रवेश करता है जहाँ ज्ञान, अनुभव, कल्पना और विचारों के असंख्य द्वार खुलते जाते हैं। पुस्तकें मनुष्य की सोच को विस्तार देती हैं और उसे इस विशाल संसार को नए दृष्टिकोण से समझने में मदद करती हैं। पढ़ने की यह प्रक्रिया धीरे-धीरे मनुष्य के व्यक्तित्व को तराशती है और उसे अधिक समझदार, संवेदनशील तथा परिपक्व बनाती है।

बचपन से ही जब बच्चे पुस्तकों से परिचित होते हैं, तब उनमें जिज्ञासा, कल्पनाशक्ति और सीखने की क्षमता बढ़ती है। कहानी की किताबें बच्चों को सपनों के संसार में ले जाती हैं, जहाँ वे नायक-नायिकाओं के साहस और संघर्ष से प्रेरित होते हैं। दूसरी ओर, बड़े होने पर जब व्यक्ति ज्ञान-विज्ञान, इतिहास, मनोविज्ञान या जीवनी जैसी किताबें पढ़ता है, तो उसका दृष्टिकोण व्यापक होता जाता है। वह जीवन, समाज और मनुष्य के व्यवहार को गहराई से समझने लगता है। इस प्रकार, पुस्तकों का प्रभाव किसी एक आयु या वर्ग तक सीमित नहीं रहता; वे जीवन भर मनुष्य के साथ चलने वाली

रितेश कुमार

प्रबंधक (राजभाषा)

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल

शाखा प्रमुख की समीक्षा बैठक

यूको बैंक, अंचल कार्यालय करनाल द्वारा दिनांक 18 मई 2025 को शाखा प्रमुखों की कारोबारी समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में अंचल की विभिन्न शाखाओं से आए शाखा प्रमुखों ने सक्रिय रूप से सहभागिता की।

इस महत्वपूर्ण बैठक की अध्यक्षता अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह ने की, जिनके कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में यह आयोजन अत्यंत सफल रहा। इस अवसर पर उप अंचल प्रमुख श्री अविनाश पाण्डेय, मुख्य प्रबंधकगण श्री एकाग्र प्रकाश त्यागी, श्री चंदन कुमार, श्री अभिजीत सिंह एवं श्रीमती प्रिया शर्मा उपस्थित रहे।

बैठक के दौरान शाखाओं की कार्यप्रणाली, व्यवसाय वृद्धि, ऋण वितरण, जमाओं की स्थिति, क्रॉस सेलिंग तथा ग्राहक सेवा जैसे विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं पर गहन चर्चा की गई।

बैठक में कार्य निष्पादन के आधार पर शाखाओं का मूल्यांकन किया गया। उन शाखाओं को विशेष रूप से सराहा गया, जिन्होंने उत्कृष्ट कार्य किया। श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शाखाओं को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया, जिससे अन्य शाखाओं को भी प्रेरणा मिल सके और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को बल मिले।

बैठक के दौरान लिए गए कुछ चित्र

समीक्षा बैठक में शाखाओं को उत्कृष्ट कार्यानिष्पदन हेतु सम्मानित

डिजिटल फास्टिंग

डिजिटल युग में मानव जीवन अभूतपूर्व गति से आगे बढ़ा है, जहाँ सूचना, संचार और मनोरंजन का अधिकांश भाग तकनीक पर निर्भर हो गया है। स्मार्टफोन, लैपटॉप, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन मनोरंजन और कार्य आधारित डिजिटल साधनों ने आधुनिक मनुष्य को सुविधाजनक जीवन तो दिया है, पर इसी सुविधा ने उसे तकनीक का अभ्यस्त और कई बार मानसिक रूप से उस पर निर्भर भी बना दिया है। इसी संदर्भ में "डिजिटल फास्टिंग" का विचार संसार भर में महत्त्वपूर्ण विमर्श का विषय बन गया है। डिजिटल फास्टिंग तकनीक से दूरी बनाकर स्वयं को मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से पुनः संतुलित करने की प्रक्रिया है, जो आधुनिक जीवन की जटिलताओं के बीच मनुष्य को उसकी मूल प्रकृति, शांति और आत्मसंबंध की ओर लौटने में सहायक होती है।

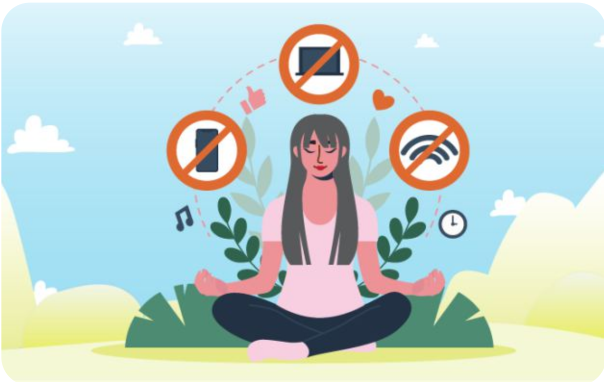

आज तकनीक पर निर्भरता के दुष्परिणाम प्रत्यक्ष रूप से लोगों के व्यवहार, व्यक्तित्व और जीवनशैली में देखने को मिलते हैं। एक ही छत के नीचे बैठे परिवार के सदस्य भी एक-दूसरे से संवाद करने के बजाय अपने-अपने फोन में व्यस्त दिखाई देते हैं। लगातार स्क्रीन पर नजर टिकाए रहने से आँखों में तनाव, सिरदर्द, अनिद्रा, चिड़चिड़ापन, ध्यान की कमी, अवसाद और सामाजिक अलगाव जैसे दुष्प्रभाव आम हो गए हैं। कार्यस्थल पर दक्षता, अध्ययन में एकाग्रता तथा मानवीय संबंधों की गहराई पर भी इसका प्रत्यक्ष नकारात्मक प्रभाव होता है। इन परिस्थितियों में डिजिटल फास्टिंग व्यक्ति को न केवल तकनीकी निर्भरता से अस्थायी मुक्ति देता है बल्कि उसकी मानसिक सतर्कता, भावनात्मक स्थिरता और सामाजिक संबंधों को भी पुनर्जीवित करता है।

डिजिटल फास्टिंग का सबसे बड़ा लाभ मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। निरंतर स्क्रीन पर रहने से मस्तिष्क लगातार उत्तेजित अवस्था में रहता है, जिससे उसे विश्राम का अवसर नहीं मिल पाता। सूचना की निरंतर बाढ़ और सोशल मीडिया पर प्राप्त होने वाले लाइक्स, कमेंट्स और प्रतिक्रियाएँ मस्तिष्क को डोपामाइन का तत्काल लेकिन अस्थायी संतोष देती हैं, जिससे व्यक्ति धीरे-धीरे डिजिटल उत्तेजना पर निर्भर हो जाता है। जब व्यक्ति कुछ घंटों या दिनों के लिए डिजिटल स्क्रीन से दूरी बनाता है तो उसका मस्तिष्क शांत अवस्था में लौटने लगता है। अनावश्यक तनाव कम होता है, एकाग्रता बढ़ती है और मन में स्थिरता का भाव

विकसित होता है। यह मानसिक डिटॉक्स आधुनिक जीवन में एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है।

डिजिटल फास्टिंग शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत लाभकारी है। आज बड़ी संख्या में लोग गर्दन में दर्द, पीठ में जकड़न, आँखों की थकान और नींद के विकारों से जूझ रहे हैं, जिसका मुख्य कारण है लगातार स्क्रीन पर झुके रहना और देर रात तक मोबाइल फोन का उपयोग। डिजिटल फास्टिंग के दौरान जब व्यक्ति कुछ समय के लिए उपकरणों से दूर रहता है, तो शरीर को आराम मिलता है, जैविक घड़ी नियमित होती है और नींद की गुणवत्ता बेहतर होती है। यह दूरी व्यक्ति को शारीरिक गतिविधियों के लिए समय निकालने, प्रकृति के साथ जुड़ने और एक स्वस्थ दिनचर्या अपनाने के लिए प्रेरित करती है।

डिजिटल फास्टिंग का एक गहरा सामाजिक पक्ष भी है। डिजिटल उपकरणों ने जहाँ लोगों को दुनिया के किसी भी कोने से जोड़ने की क्षमता दी है, वहीं वास्तविक जीवन के संबंध कमजोर होते जा रहे हैं। परिवार और समाज के बीच संवाद सीमित होने लगा है। लोग भावनाओं को साझा करने के बजाय स्क्रीन पर स्क्रॉल करना अधिक सहज समझते हैं। ऐसे समय में जब व्यक्ति डिजिटल फास्टिंग अपनाता है, तो वह वास्तविक संबंधों की ओर वापस लौटता है। परिवार से बातचीत, मित्रों से आत्मीय संबंध, माता–पिता के साथ समय और सामाजिक सहभागिता एक बार फिर जीवन का मूल हिस्सा बन जाते हैं। यह प्रक्रिया व्यक्ति को आंतरिक रूप से अधिक संतुष्ट, संतुलित और खुशहाल बनाती है।

कार्यस्थल पर डिजिटल फास्टिंग का प्रभाव भी उल्लेखनीय है। लगातार सूचनाओं, संदेशों और ईमेल के कारण ध्यान भटकना बहुत सामान्य हो गया है। इससे कार्यक्षमता घटती है और मानसिक थकान बढ़ती है। डिजिटल फास्टिंग व्यक्ति को कार्य के प्रति अधिक केंद्रित बनाती है। जब कर्मचारी स्वयं को निर्धारित समय के लिए ईमेल, सोशल मीडिया और फोन से दूर रखते हैं, तो वे न केवल बेहतर निर्णय ले पाते हैं बल्कि कार्य की गुणवत्ता में भी सुधार होता है। कार्यस्थल पर डिजिटल फास्टिंग का अभ्यास कर्मचारियों में उत्पादकता, रचनात्मकता और नवाचार को भी बढ़ावा देता है।

डिजिटल फास्टिंग का उद्देश्य तकनीक को त्यागना नहीं बल्कि उसके संतुलित और सजग उपयोग को बढ़ावा देना है। तकनीक आधुनिक जीवन का अनिवार्य अंग है, और उसके बिना कार्य, शिक्षा,

सामाजिक संपर्क और मनोरंजन लगभग असंभव हो गया है। इसलिए डिजिटल फास्टिंग कोई विरक्ति या त्याग-आधारित अभ्यास नहीं, बल्कि एक संतुलित जीवनशैली अपनाने का माध्यम है। यह व्यक्ति को यह समझने में सक्षम बनाता है कि तकनीक का उपयोग कब और कितना करना उचित है। समय अनुशासन, आत्मनियंत्रण और मनोवैज्ञानिक स्पष्टता इस अभ्यास से विकसित होने वाले सबसे महत्वपूर्ण गुण हैं।

डिजिटल फास्टिंग को प्रभावी बनाने के लिए कुछ सरल लेकिन अनुशासित कदम अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं। दिन के कुछ समय जैसे भोजन के दौरान, सुबह जागने के बाद और रात को सोने से पूर्व मोबाइल का पूर्ण बहिष्कार किया जा सकता है। सप्ताह में एक दिन सोशल मीडिया से पूरी तरह दूर रहकर भी व्यक्ति मानसिक संतुलन बना सकता है। घर के भीतर "नो-फोन ज़ोन" बनाना जैसे शयनकक्ष या भोजन कक्ष जीवन में स्वस्थ आदतों को स्थापित करता है। कई लोग प्रत्येक माह एक दिन डिजिटल अवकाश लेकर अपने मन और शरीर को पूर्ण विश्राम देते हैं। ऐसे अभ्यास धीरे-धीरे व्यक्ति के जीवन में गहराई से शामिल हो जाते हैं और उसे अधिक सजग एवं संतुलित बनाते हैं।

डिजिटल फास्टिंग के दीर्घकालिक प्रभाव अत्यंत सकारात्मक होते हैं। यह व्यक्ति की भावनात्मक गहराई, आत्मचिंतन, रचनात्मकता और आत्मविश्वास को बढ़ाता है। जब मन प्रौद्योगिकी की निरंतर उत्तेजना से मुक्त होता है, तब वह स्वयं से संवाद करने, जीवन के उद्देश्य को समझने और बेहतर निर्णय लेने में सक्षम होता है। यह प्रक्रिया जीवन को अधिक सार्थक, अनुशासित और संतुलित बनाती है। सामाजिक स्तर पर भी डिजिटल फास्टिंग सामूहिक चेतना को विकसित करती है, जहाँ लोग तकनीक पर निर्भरता कम कर वास्तविक संबंधों, सामुदायिक भावना और मानवीय मूल्यों को प्राथमिकता देने लगते हैं।

अंततः डिजिटल फास्टिंग आधुनिक जीवन की उन आवश्यकताओं में से एक है, जो न केवल मनुष्य को मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाती है, बल्कि उसे एक संवेदनशील, जागरूक और संतुलित जीवन की ओर भी ले जाती है। यह अभ्यास आत्म-अनुभूति, आत्म-अनुशासन और आत्म-विकास का माध्यम बनकर आज के डिजिटल युग में एक नवीन और आवश्यक जीवन-दर्शन के रूप में उभर रहा है। मनुष्य जितना तकनीक का उपयोग कौशलपूर्वक करता है, उतना ही आवश्यक है कि वह उससे समय-समय पर दूरी भी बनाए, ताकि जीवन की मूल सुंदरता, मानवीय संबंधों की गहराई और मन की स्वाभाविक शांति को सुरक्षित रखा जा सके।

कुसुम लता
सहायक प्रबंधक
तरावड़ी शाखा

एमएसएमई, कृषि एवं रिसोर्स कार्निवल

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल द्वारा दिनांक 23 जून 2025 को "एमएसएमई, कृषि एवं रिसोर्स कार्निवल" का आयोजन अंचल कार्यालय के सभागार कक्ष में किया गया। यह आयोजन न केवल बैंकिंग उद्देश्यों की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा, बल्कि इसकी व्यापकता और प्रभावशीलता ने शाखा प्रमुखों को एक नवीन दृष्टिकोण भी प्रदान किया।इस विशेष अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता आदरणीय श्री मनीष कुमार, प्रधान कार्यालय ने की। उनकी गरिमामयी उपस्थिति ने इस कार्यक्रम की महत्ता को और भी बढ़ा दिया। कार्यक्रम में अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह, उप अंचल प्रमुख श्री अविनाश पाण्डेय सहित अंचल कार्यालय के अधिकारीगण एवं समीपवर्ती शाखाओं के शाखा प्रमुखों की उपस्थिति ने आयोजन को उद्देश्यपूर्ण एवं सफल बनाया।कार्यक्रम का विशेष आकर्षण शाखा प्रमुखों के साथ प्रत्यक्ष संवाद था। उन्होंने शाखा प्रमुखों के अनुभवों को सुना, उनके सुझावों को गंभीरता से लिया और बैंक की रणनीतियों को जमीनी स्तर पर किस प्रकार क्रियान्वित किया जा सकता है, इस पर मार्गदर्शन भी प्रदान किया।

अंचल कार्यालय, करनाल में आयोजित एमएसएमई, कृषि एवं रिसोर्स कार्निवल के सफल समापन के पश्चात, एक विशेष बैठक का आयोजन महाप्रबंधक आदरणीय श्री मनीष कुमार जी की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया। यह बैठक विशेष रूप से यूको बैंक से सेवानिवृत्त कर्मचारियों को समर्पित थी। इस आयोजन में सेवानिवृत्त कर्मचारियों ने आदरणीय मुख्य अतिथि का सादर स्वागत किया। शाल ओढ़ाकर एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर उन्होंने अपने सम्मान और भावनाएं प्रकट कीं। श्री मनीष कुमार जी ने अपने संबोधन में सेवानिवृत्त कर्मचारियों को यूको बैंक का ब्रांड एम्बेसडर कहकर संबोधित किया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि,"सेवानिवृत्त होना बैंक से दूर होना नहीं है, बल्कि अनुभव और विश्वास के साथ संस्था से और गहराई से जुड़ने का एक नया चरण है।"उन्होंने यह भी कहा कि सेवानिवृत्त अधिकारी व कर्मचारी न केवल बैंक के इतिहास के साक्षी हैं, बल्कि उसके भविष्य को दिशा देने वाले विचारशील स्तंभ भी हैं। उनके अनुभव, उनकी निष्ठा और समर्पण आज भी युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।आप सभी की सोच, सुझाव और अनुभव बैंक की निरंतर प्रगति के लिए मूल्यवान हैं।

डिजिटल अरेस्ट : एक बढ़ता साइबर धोखा

डिजिटल युग का प्रसार जितनी तेजी से हमारे जीवन को सुविधाजनक बना रहा है, उतनी ही तीव्र गति से साइबर अपराधों का स्वरूप भी बदल रहा है। इंटरनेट आधारित ठगी अब सिर्फ आर्थिक नुकसान तक सीमित नहीं रही, बल्कि मनोवैज्ञानिक दबाव और भय का उपयोग करते हुए नागरिकों को मानसिक रूप से पंगु कर देने वाली नई विधाओं में परिवर्तित हो चुकी है। इनमें सबसे खतरनाक प्रवृत्तियों में से एक है "डिजिटल अरेस्ट", जिसमें अपराधी स्वयं को किसी सरकारी एजेंसी, पुलिस विभाग, अपराध शाखा या साइबर सेल का अधिकारी बताकर लोगों को कथित मुकदमों, विदेशी पार्सल धोखाधड़ी, मनी-लॉन्ड्रिंग या ड्रग-संबंधी मामलों में फंसाने की धमकी देते हैं। भय और भ्रम का ऐसा वातावरण तैयार कर दिया जाता है कि व्यक्ति अपने सामान्य विवेक का प्रयोग भी नहीं कर पाता और पूरी तरह जाल में फँस जाता है।

डिजिटल अरेस्ट प्रकरणों की विशिष्टता यह है कि ये घटनाएँ तकनीकी और मनोवैज्ञानिक दोनों स्तरों पर अत्यंत व्यवस्थित ढंग से संचालित की जाती हैं। अपराधी पहले चरण में पीड़ित से संपर्क स्थापित करते हैं, सामान्यतः वीडियो कॉल, वॉइस कॉल या चैट के माध्यम से; फिर उसे बताया जाता है कि उसके दस्तावेज किसी अपराध में उपयोग हुए हैं या उसके नाम से कोई गैरकानूनी गतिविधि दर्ज हुई है। इसके बाद एक भयावह कहानी गढ़कर उसे मानसिक रूप से विचलित कर दिया जाता है। पीड़ित के मन में यह विश्वास बैठा दिया जाता है कि यदि वह सहयोग नहीं करेगा, तो उसे तत्काल गिरफ्तार कर लिया जाएगा, उसका बैंक खाता फ्रीज़ कर दिया जाएगा, विदेश यात्रा प्रतिबंधित कर दी जाएगी या उस पर कानूनी कार्रवाई शुरू हो जाएगी। भय की इसी मनोस्थिति में उसे अपने बैंक खाते, ओटीपी, आधार जानकारी, पहचान-पत्रों या धन-हस्तांतरण से संबंधित संवेदनशील विवरण साझा करने के लिए मजबूर किया जाता है।

सबसे चिंताजनक बात यह है कि डिजिटल अरेस्ट का यह खेल सिर्फ तकनीकी अपराध भर नहीं है, बल्कि यह एक गहन मनोवैज्ञानिक संचालन भी है। अपराधियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले स्वर, भाषा, तकनीकी शब्दावली, और कथित सरकारी पृष्ठभूमि का आवरण इतना पेशेवर होता है कि सामान्य व्यक्ति ही नहीं, बल्कि शिक्षित, प्रशिक्षित और उच्च पदों पर कार्यरत लोग भी झाँसे में आ जाते हैं। अपराधी इस बातचीत के दौरान पीड़ित को लगातार वीडियो कॉल पर बनाए रखते हैं, ताकि वह

किसी परिचित, परिवारजन, कार्यालय सहयोगी या बैंक प्रतिनिधि से सलाह न ले सके। यह निरंतर निगरानी एक प्रकार का “वर्चुअल कैद” का वातावरण बना देती है, जिसमें व्यक्ति को लगता है कि वह किसी वास्तविक कानूनी प्रक्रिया से गुजर रहा है और उसके हर कदम की निगरानी की जा रही है।

इन मामलों में देखा गया है कि अपराधी कथित “कानूनी प्रोटोकॉल” का हवाला देकर पीड़ित से पैसे किसी सुरक्षित खाते में ट्रांसफर करने को कहते हैं, जिसे वे “इन्वेस्टिगेशन वॉलेट” या “वेरिफिकेशन अकाउंट” बताते हैं। व्यक्ति भय और दबाव में वह राशि तुरंत भेज देता है, क्योंकि उसे लगता है कि यह सिर्फ अस्थायी प्रक्रिया है और मामले की जांच के बाद पैसा वापस मिल जाएगा। इसी मनोवैज्ञानिक भ्रम का फायदा उठाते हुए अपराधी लाखों रुपये कुछ ही मिनटों में उड़ा लेते हैं। कई मामलों में पीड़ितों ने बताया कि उन्हें 8–10 घंटे निरंतर वीडियो कॉल पर रखा गया, उन्हें खाने-पीने तक की अनुमति नहीं दी गई, और बार-बार कहा गया कि “आपकी लोकेशन ट्रेस हो रही है, कॉल बंद की तो तुरंत गिरफ्तारी हो जाएगी।” यह पूरा तंत्र इतना भयावह होता है कि व्यक्ति स्वयं को सचमुच किसी कानूनी गिरफ्त में समझ बैठता है।

डिजिटल अरेस्ट का यह उभरता हुआ स्वरूप समाज में एक नई प्रकार की असुरक्षा उत्पन्न कर रहा है। पहली बार ऐसा हो रहा है कि अपराधी लोगों के घर बैठे, उनके मन पर कब्जा कर लेते हैं। यह सिर्फ आर्थिक लूट नहीं, बल्कि मनोवैज्ञानिक उत्पीड़न, मानसिक शोषण और भावनात्मक दमन का संगठित तंत्र है। डर इस कदर होता है कि पीड़ित कई बार परिवार को भी कुछ नहीं बताते, और जब तक उन्हें समझ आता है कि वे ठगी का शिकार बन चुके हैं, तब तक काफी देर हो चुकी होती है। ऐसे मामलों में आत्मग्लानि, मानसिक अवसाद और सामाजिक भय भी गहरी चोट पहुँचा देते हैं।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि इन घटनाओं का विस्तार केवल महानगरों तक सीमित नहीं, बल्कि छोटे शहरों, कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों तक भी फैल चुका है। इंटरनेट की उपलब्धता ने जहां लोगों को तकनीकी रूप से मजबूत बनाया, वहीं साइबर अपराधियों के लिए भी अवसरों के नए रास्ते खोल दिए। अपराधी ऐसे देशों से संचालित होते हैं जहाँ साइबर नियंत्रण व्यवस्था कमजोर है या अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्रवाई जटिल होती है, जिससे इनका नेटवर्क और भी निडर होकर काम करता है। कई बार ये गिरोह अलग-अलग

देशों में बसे लोगों को निशाना बनाते हैं, ताकि पुलिस या साइबर एजेंसी द्वारा त्वरित कार्रवाई करना कठिन हो जाए।

ऐसे समय में समाज को डिजिटल साक्षरता का महत्व अत्यंत बढ़ जाता है। यह जरूरी है कि नागरिकों को बताया जाए कि कोई भी सरकारी एजेंसी, पुलिस विभाग, या बैंक कभी भी फोन या वीडियो कॉल के माध्यम से किसी को गिरफ्तार करने की धमकी नहीं देता; न ही किसी भी जांच के नाम पर पैसे किसी खाते में जमा करवाए जाते हैं। इस तरह की जानकारी विद्यालयों, महाविद्यालयों, कार्यस्थलों, बैंकों और सामाजिक संस्थानों द्वारा लगातार लोगों तक पहुँचाई जानी चाहिए। मीडिया, विशेषकर डिजिटल और प्रिंट मीडिया को भी ऐसे मामलों पर जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

समाज में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए साइबर सुरक्षा तंत्र को मजबूत करना जरूरी है, लेकिन इसके साथ ही नागरिकों में आत्मविश्वास और जागरूकता पैदा करना उससे भी महत्वपूर्ण है। डिजिटल अरेस्ट जैसी ठगी से बचाव के लिए सबसे पहला नियम है किसी भी अज्ञात कॉल, वीडियो कॉल या ईमेल पर तुरंत विश्वास न करना और किसी भी प्रकार की धमकी या दबाव की स्थिति में शांत रहकर सोचने की क्षमता बनाए रखना। किसी भी संदिग्ध स्थिति में फोन काटकर संबंधित हेल्पलाइन या स्थानीय साइबर पुलिस से सत्यापन करना चाहिए। साइबर अपराधों के खिलाफ शिकायत दर्ज कराना भी आवश्यक है, ताकि इन मामलों की संख्या दर्ज हो सके और प्रशासनिक जागरूकता बढ़े।

डिजिटल अरेस्ट केवल एक ठगी का तरीका नहीं, बल्कि आधुनिक समाज के लिए एक गंभीर चेतावनी है। यह बताता है कि तकनीक का गलत उपयोग किस हद तक मानव मन को नियंत्रित कर सकता है और कैसे भय का दुरुपयोग करके व्यक्ति को उसकी ही पहचान, विवेक और निर्णय क्षमता से दूर किया जा सकता है। समय की मांग है कि हम सभी अपने डिजिटल व्यवहार को समझें, सुरक्षित डिजिटल आदतें विकसित करें और अपने आसपास के लोगों को भी जागरूक करें। यह लड़ाई केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और प्रशासनिक स्तरों पर संयुक्त प्रयास की माँग करती है। यदि नागरिक सतर्क रहें, संस्थाएँ जागरूकता फैलाएँ और तकनीकी तंत्र मजबूत हो, तो डिजिटल अरेस्ट जैसे अपराधों की जड़ें स्वयं ही कमजोर पड़ जाएँगी।

कृष्ण कांत

प्रबंधक

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल

अप्रैल - सितंबर छमाही में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शाखाएं

गृह ऋण

जुलाना शाखा
हिसार शाखा
शीला बाई पास रोहतक

कार ऋण

महेन्द्रगढ़ शाखा
रेवाडी शाखा
पानीपत शाखा

कोर कृषि ऋण

निसिंग शाखा
तरावड़ी शाखा
करनाल शाखा

वित्तीय समावेशन

अटल पेंशन योजना

पानीपत शाखा
जुलाना शाखा
फतेहाबाद शाखा

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना

अटेली मंडी शाखा
बहादुरगढ शाखा
धांड शाखा

प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना

जुलाना शाखा
चरखी दादरी शाखा
कुंडली शाखा

वसूली में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शाखाएं

- पानीपत शाखा
- जगाधरी शाखा
- जुलाना शाखा

बीमा के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शाखाएँ

जीवन बीमा

बाबरपुर शाखा
समालखा शाखा
एस एस एस रोहतक शाखा

स्वास्थ्य बीमा

फतेहाबाद शाखा
एलेनबाई लाईस शाखा
समालखा शाखा

डिजिटल के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शाखाएँ

एम बैंकिंग	ई-बैंकिंग	एटीएम कार्ड	व्हाटएप बैंकिंग
जुलाना शाखा	एच वी वी भिवानी शाखा	जुलाना शाखा	मंडी डबवाली शाखा
मंडी डबबाली शाखा	रतिया शाखा	पानीपत शाखा	करनाल शाखा
जगाधरी शाखा	हिसार शाखा	फतेहाबाद शाखा	रादौर शाखा

मर्चेंट –क्यू आर	साउंड बॉक्स	एम बैंकिंग- कॉर्पोरेट	ई-बैंकिंग-कॉर्पोरेट
बांदाहेड़ी शाखा	जुलाना शाखा	हिसार शाखा	हिसार शाखा
लोहारू शाखा	नीलोखेड़ी शाखा	सिरसा शाखा	नीलोखेड़ी शाखा
जुलाना शाखा	फतेहाबाद शाखा	रोहतक शाखा	डाबरा चौक शाखा

कोर एमएसएमई में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शाखाएँ

तरावड़ी शाखा | राम नगर शाखा | पानीपत शाखा

कर्ण : महाभारत का विलक्षण नायक

महाभारत केवल एक युद्ध की कथा नहीं, बल्कि मानवीय भावनाओं, आदर्शों, संघर्षों, निष्ठा, नैतिकता और नियति के गहन रहस्यों का विराट ग्रंथ है। इस महाकाव्य में असंख्य पात्र हैं हर एक अद्वितीय, हर एक महत्त्वपूर्ण। किंतु उन सबमें सबसे अधिक स्पंदित करने वाला, सबसे अधिक संवेदनशील और सबसे अधिक जटिल चरित्र कर्ण का है। कर्ण का जीवन विरोधाभासों का जीवन है अत्युच्च गुण और अतिगहन वेदना, अद्वितीय शौर्य और अविरल त्याग, विशाल हृदय और त्रासद नियति इन सबका संगम उन्हें महाभारत का सबसे मानवीय, सबसे जीवंत, और सबसे मार्मिक नायक बनाता है।

कर्ण का जन्म ही उनके जीवन की पहली विडंबना था। वे सूर्यदेव के वरदान से जन्मे एक दिव्य बालक थे, जिनके शरीर पर जन्म से कवच और कुंडल थे। उनके भीतर असाधारण तेज और अप्रतिम ऊर्जा थी। किंतु सामाजिक भय और मर्यादा के बंधनों ने महारानी कुंती को विवश कर दिया कि वे इस नवजात शिशु को नदी में प्रवाहित कर दें। यही वह क्षण था जिसने कर्ण के जीवन की संपूर्ण दिशा निर्धारित कर दी एक जन्माधिकार छिन गया, एक पहचान बदल गई, और एक नायक अनजाने में ऐसे संघर्षों का पात्र बन गया जिन्हें वह स्वयं कभी चुनता भी नहीं।

अधिरथ और राधा के घर पाले गए कर्ण को समाज ने "सूत-पुत्र" कहकर पुकारा। यहाँ से प्रारंभ हुई वह पीड़ा जिसे उन्होंने जीवन भर सहा। वे क्षत्रिय गुणों से परिपूर्ण थे, किंतु उन्हें क्षत्रिय मानने से समाज ने इनकार कर दिया। यह दुविधा पूरे जीवन उनके साथ रही वे हर गुण में श्रेष्ठ, पर सामाजिक पद में सबसे नीचे। यह विरोधाभास उनके चरित्र की गहरी जड़ों में समाया है, और यही उन्हें असीम करुणा और असीम दृढ़ता दोनों का धनी बनाता है।

युवावस्था में ही कर्ण ने धनुर्विद्या में अप्रतिम कौशल प्रदर्शित किया। उनका साहस, एकाग्रता और कौशल देखकर कोई भी मंत्रमुग्ध हो सकता था। किंतु गुरु द्रोण ने उन्हें केवल इस कारण स्वीकार नहीं किया कि वे सूत-पुत्र कहलाते थे। यह सामाजिक असमानता का वह क्षण था जिसने कर्ण के भीतर के ज्वालामुखी को

जागृत किया जिसने उन्हें यह प्रण दिलाया कि वे किसी भी प्रकार अर्जुन से श्रेष्ठ बनकर दिखाएँगे। यह प्रतिज्ञा उनके जीवन का केंद्रीय ध्येय बन गई—एक ऐसा लक्ष्य जो उन्हें महानता की चोटी तक भी ले गया, और अन्ततः उन्हें विनाश की ओर भी।

परशुराम के आश्रम में उन्होंने असाधारण धनुर्धर बनने की तैयारी की। किंतु परशुराम का यह नियम कि वे केवल ब्राह्मणों को ही शिक्षा देंगे, कर्ण को अपना जन्म-परिचय छिपाने पर विवश करता है। जब बाद में सत्य का उद्‌घाटन हुआ, परशुराम का दिया कठोर शाप कि निर्णायक क्षण में वे अपना दिव्य ज्ञान भूल जाएँगे उनके जीवन की दूसरी बड़ी त्रासदी बना। यह शाप कर्ण की नियति पर उसी क्षण अंकित हो गया था।

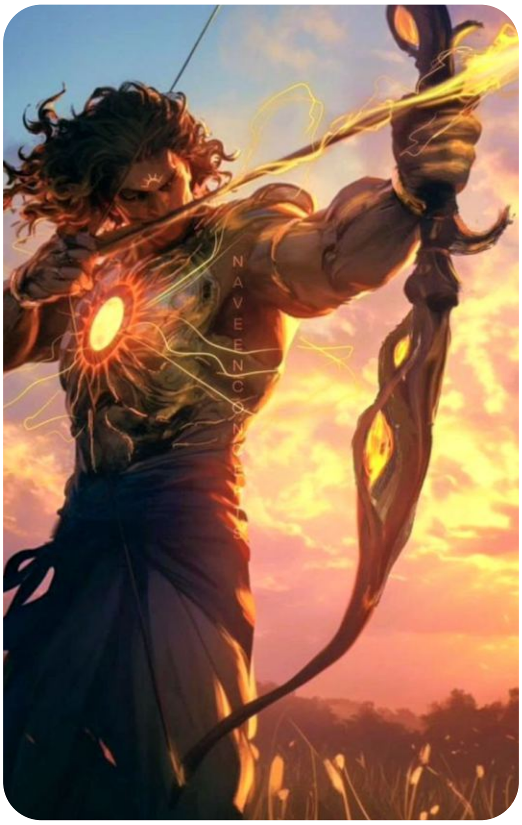

कर्ण के जीवन में पहली बार सामाजिक सम्मान तब आया जब दुर्योधन ने उन्हें अंगदेश का राजा घोषित किया। यह दुर्योधन की राजनीतिक दूरदर्शिता भी थी, और एक सच्चे मित्र के रूप में उसकी उदारता भी। समाज ने जिसे नकारा, दुर्योधन ने उसे स्वीकार किया और यही वह क्षण था जिसने कर्ण को आजीवन दुर्योधन का मित्र और सहयोगी बना दिया। यह निष्ठा इतनी गहरी थी कि जब कुंती ने स्वयं उन्हें पांडवों का ज्येष्ठ पुत्र होने का सत्य बताया, तब भी कर्ण ने यह कहते हुए कौरव पक्ष नहीं छोड़ा कि "जिस मित्र ने मेरे अपमान के क्षण में मेरा सम्मान किया, मैं उसे युद्ध में नहीं छोड़ सकता।" यह निष्ठा कर्ण के चरित्र की सबसे विशाल और सबसे पवित्र पहचान है।

कर्ण केवल योद्धा नहीं, बल्कि अतुलनीय दानवीर भी थे। "दानवीर कर्ण" का उपाधि इतिहास की अनमोल धरोहर है। वे कभी किसी याचक को निराश नहीं करते थे चाहे अपनी जान जोखिम में डालकर भी क्यों न देना पड़े। कवच-कुंडल का दान इसका सर्वोच्च उदाहरण है। यह केवल दान नहीं, बल्कि अपना जीवन दाँव पर लगा देने का निर्णय था। यह दान उनकी नैतिकता और उदारता के सर्वोच्च शिखर को दर्शाता है एक ऐसा चरित्र जो आदर्श को जीवन से ऊपर रखता है।

महाभारत युद्ध में उनका पराक्रम अनुकरणीय था। वे कौरव सेना के सबसे प्रबल योद्धाओं में गिने जाते थे। भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, यहाँ तक कि अभिमन्यु तक कई पांडव सैन्य शक्ति उनके सामने

टिक नहीं पाई। किंतु नियति हमेशा उनके साथ अन्याय करती रही कभी रथ की धुरी धँस गई, कभी शाप मार्ग में आया, कभी सूर्यास्त ने बाधा डाली, तो कभी अर्जुन को कृष्ण का संरक्षण मिला। उनके जीवन में कौशल की कमी कभी नहीं थी, कमी थी केवल भाग्य की। नियति ने उन्हें हर बार उसी क्षण धोखा दिया जब विजय उनके हाथों की दूरी पर थी।
अर्जुन के साथ उनका अंतिम युद्ध महाभारत का सबसे मार्मिक क्षण है। जब उनका रथ कुएँ में धँस गया और वे क्षण भर के लिए निहत्थे हुए, तब युद्ध के नियमों पर भारी पड़ी वास्तविकताऔर अर्जुन ने उनके जीवन का अंत किया। यह प्रसंग आज भी नैतिकता, नियम और धर्म पर गहन विमर्श का आधार है। कर्ण की मृत्यु के साथ वह युग समाप्त हुआ जिसमें एक असाधारण प्रतिभा केवल सामाजिक भेदभाव और नियति की विसंगतियों का शिकार बनकर रह गई।
कर्ण का जीवन हमें गहरे संदेश देता है। वे कहते हैं कि जन्म श्रेष्ठता नहीं देता श्रेष्ठ बनाती है प्रतिभा, परिश्रम और चरित्र। वे यह भी सिखाते हैं कि निष्ठा किसी भी मूल्य पर निभाई जा सकती है, परंतु कभी-कभी निष्ठा भी व्यक्ति को गलत पक्ष में खड़ा कर देती है। उनकी उदारता यह सिखाती है कि मनुष्य की महानता उसके देने के स्वभाव में है, न कि उसके पास क्या है। और उनका संघर्ष यह सिखाता है कि जीवन में कभी-कभी सबसे योग्य व्यक्ति भी केवल इसलिए हार जाता है क्योंकि समाज उसे उसका उचित स्थान देने से इनकार कर देता है।
कर्ण महाभारत के नायक भी हैं और त्रासदी भी एक ऐसे नायक जिनकी महानता सूर्य की भाँति प्रखर थी, परंतु जिन्हें समाज ने कभी अपना आकाश नहीं दिया। वे संघर्ष, साहस, आत्मसम्मान और विपरीत परिस्थितियों में भी सिद्धांतों पर अडिग रहने की अद्भुत मिसाल हैं। वे महाभारत की आत्मा में गहराई तक बसे हुए वह व्यक्तित्व हैं, जिनके बिना महाभारत अधूरा है।
कर्ण का जीवन आज भी हमें प्रेरित करता है यह सिखाता है कि परिस्थिति चाहे कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हो, अपने मूल्य, अपने कर्तव्य और अपनी गरिमा को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। संघर्ष महानता की सीढ़ी है, और कर्ण इस सत्य के सबसे तेजस्वी प्रतीक हैं। महाभारत का यह विलक्षण नायक आज भी साहित्य, समाज, दर्शन और मनोविज्ञान में आदर्श बनकर जीवित है—एक ऐसा आदर्श जो बताता है कि महानता संघर्षों से जन्म लेती है, अवसरों से नहीं।

चंदन कुमार चौधरी
मुख्य प्रबंधक
यूको बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल

राष्ट्रीय खेल दिवस पर यूको बैंक द्वारा वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन

राष्ट्रीय खेल दिवस 2025 के उपलक्ष्य में यूको बैंक, अंचल कार्यालय करनाल द्वारा श्री राम चरित मानस सीनियर सेकेंडरी स्कूल, करनाल में एक भव्य वॉलीबॉल प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय प्रबंधन एवं यूको बैंक के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में हुआ। खेल तीन टीमों कक्षा 10वीं, 11वीं और 12वीं ने इस प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया। प्रारंभिक राउंड में सभी टीमों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और कड़े मुकाबले हुए।

फाइनल मुकाबला 10वीं और 12वीं कक्षा की टीमों के बीच खेला गया। रोमांचक और संघर्षपूर्ण मैच में कक्षा 10वीं की टीम ने 12वीं कक्षा की टीम को मात देकर विजय हासिल की। विजेता टीम को यूको बैंक, अंचल कार्यालय करनाल के अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह द्वारा विजेता शील्ड प्रदान की गई। मैदान में उपस्थित छात्रों की तालियों ने माहौल को और भी उत्साहपूर्ण बना दिया।

राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर यूको बैंक के अधिकारियों ने भी खिलाड़ियों को प्रेरित करते हुए कहा कि खेल केवल शारीरिक फिटनेस ही नहीं, बल्कि मानसिक दृढ़ता, नेतृत्व क्षमता, टीम भावना और निर्णय-कौशल को भी विकसित करते हैं। आज के समय में छात्रों का सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब

वे पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में भी सक्रियता से भाग लें।

यूको बैंक द्वारा राष्ट्रीय खेल दिवस पर आयोजित यह कार्यक्रम न केवल खेल प्रतियोगिता थी, बल्कि बच्चों में आत्मविश्वास, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और खेल भावना को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी था।

अंचल कार्यालय करनाल में स्वतंत्रता दिवस समारोह

यूको बैंक, अंचल कार्यालय करनाल में 15 अगस्त 2025 को स्वतंत्रता दिवस का भव्य एवं गरिमामय आयोजन अत्यंत उत्साह और देशभक्ति की भावना के साथ संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ अंचल कार्यालय के प्रांगण में प्रातः हुआ, जहाँ अंचल कार्यालय एवं आसपास की शाखाओं के अधिकारी तथा कर्मचारीगण उपस्थित रहे। समारोह में उप अंचल प्रमुख श्री अविनाश पाण्डेय ने राष्ट्रीय ध्वज फहराकर कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन किया। राष्ट्रीय ध्वज के आरोहण के साथ पूरे परिसर में "जन गण मन" की भावपूर्ण गूँज फैल गई, जिसने वातावरण को देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत कर दिया।

ध्वजारोहण के पश्चात उप अंचल प्रमुख महोदय ने उपस्थित कर्मचारियों को संबोधित किया। अपने उद्बोधन में उन्होंने स्वतंत्रता दिवस के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला तथा देश के स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष, बलिदान और त्याग को नमन किया। उन्होंने कहा कि आज़ादी सिर्फ एक उत्सव नहीं, बल्कि हमारी जिम्मेदारियों का स्मरण भी है।

कार्यक्रम के उपरांत सामूहिक मिठाई वितरण किया गया तथा सभी ने एक-दूसरे को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएँ दीं।

पुस्तक समीक्षा

गुनाहों का देवता — धर्मवीर भारती

धर्मवीर भारती का सुप्रसिद्ध उपन्यास "गुनाहो के देवता" हिन्दी साहित्य में प्रेम, संवेदना, त्याग की एक अनूठी मिसाल के रूप में स्थापित है।

गुनाहों का देवता

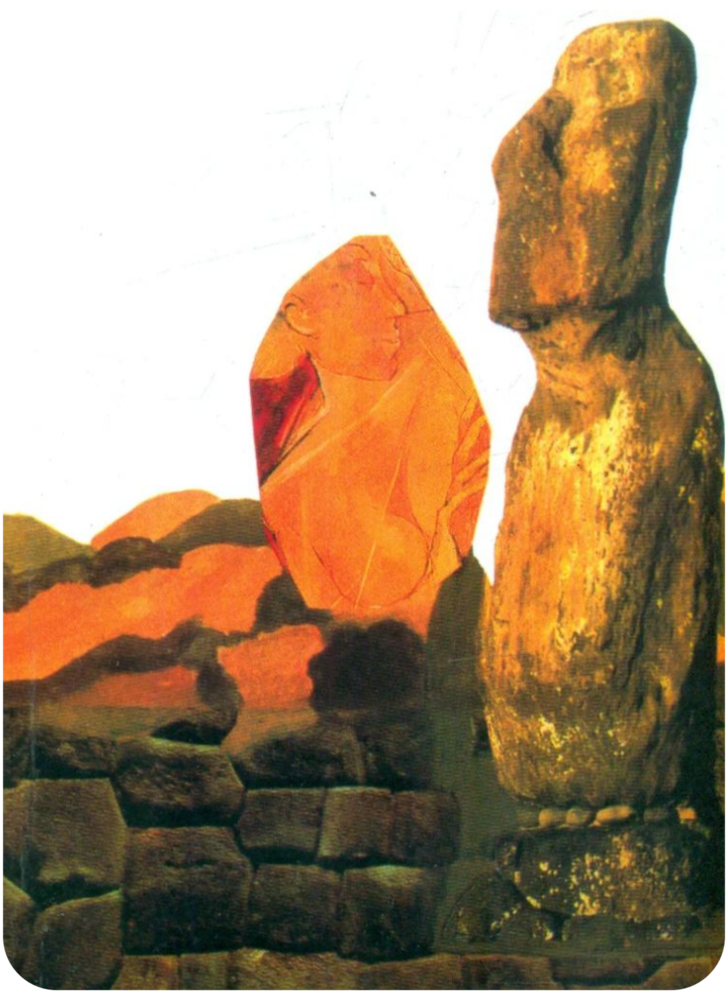

एक बैंक कर्मी के रूप में हम प्रतिदिन लोगो के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं के साक्षी बनते हैं- किसी की बेटी की शादी के लिए ऋण, किसी किसान की फसल पर आश्रित उम्मीद या किसी परिवार का संकट। इन्हीं रोजमर्रा की परिस्थितियों में यह उपन्यास हमें याद दिलाता है कि इंसान केवल " ग्राहक संख्या" नहीं, बल्कि भावनाओ, संघर्षों और सपनो का एक जीवित संसार है।

यह पुस्तक महज एक प्रेमकथा नहीं बल्कि यह मन के भीतर चुपचाप धड़कने वाली वह भावना है जो कर्तव्य, मर्यादा और त्याग के साथ चलती है। चंदर और सुधा का प्रेम कभी व्यक्त नहीं होता, पर वहीं अव्यक्त भाव उनके संबंध को सबसे गहरा बना देता है।

बैंकिंग जगत में कार्य करते हुए हम अक्सर पातें हैं कि हर इंसान अपने अंदर एक चंदर या सुधा जैसा संघर्ष छिपाए बैठा है। जैसे बैंक कर्मी अपने पेशे मे कर्त्तव्य, संयम, नैतिकता और दूसरों की परिस्थितियों को समझने की संवेदना को निभाता है, उसी तरह चंदर भी अपनी भावनाओं के बावजूद मर्यादा और दायित्व को प्राथमिकता देता है। सुधा भी अपने संबंधों को निभाते हुए उन अनकहे त्यागों को स्वीकारती है, जो

वास्तविक मे हम कभी न कभी करते हैं।

आज के दौर में, जहाँ जीवन की भागदौड़ और जिम्मेदारियाँ हमें भावनात्मक रुप से थका देती हैं, यह उपन्यास प्रेम और संवेदना की उस कोमल दुनिया का दरवाज़ा खोलता है जिसे हम अक्सर अनदेखा कर देते हैं। धर्मवीर भारती की यह कृति हमें यह सिखाती है कि - प्रेम पाने से अधिक समझने पर आधारित है जहाँ दूरी भी स्नेह को कम नहीं करती और मौन भी संबंध को कमजोर नहीं बनाता।

धर्मवीर भारती की यह कृति उन सभी के लिए अनिवार्य है जो रिश्तों, कर्तव्य और मानवीय मूल्यों को गहराई से समझना चाहते हैं- विशेषकर बैंकिंग जैसे क्षेत्र में काम करने वाले लोग जिन्हें प्रतिदिन इंसानों की अनकही कहानियों से गुजरना पड़ता है।

वर्षा शाही
वरिष्ठ प्रबंधक
करनाल शाखा

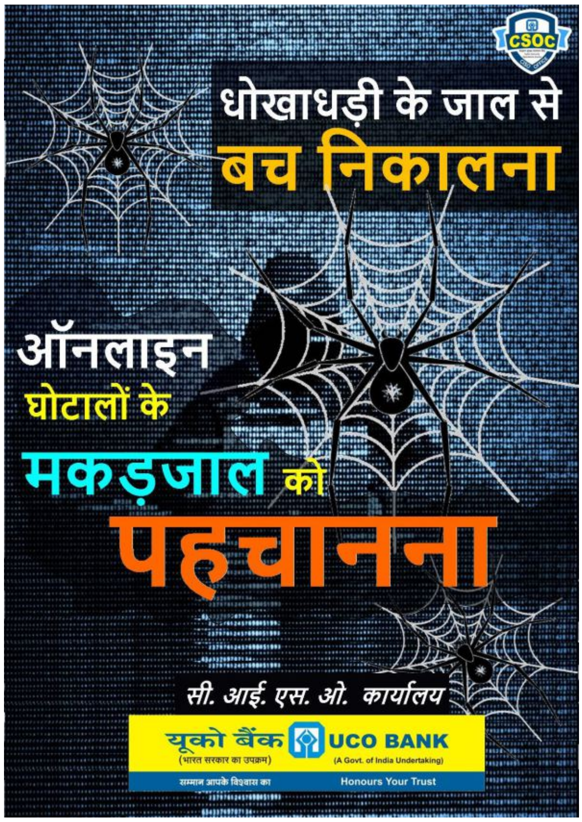

सर्दियों में सेहत: किन चीज़ों का रखें खास ध्यान

सर्दियों का आगमन होते ही वातावरण में एक अलग-सी ताजगी और चमक दिखाई देने लगती है। हल्की धूप, ठंडी हवाएँ, गिरते तापमान और गरम कपड़ों का एहसास इस मौसम की विशिष्ट पहचान बन जाते हैं। लेकिन प्राकृतिक बदलावों के साथ-साथ हमारी दिनचर्या और शरीर की जरूरतें भी बदल जाती हैं। ठंड के कारण जहां मन में आलस और सुस्ती घर कर लेती है, वहीं यही मौसम कई स्वास्थ्य समस्याओं को भी जन्म देता है। सर्दी-जुकाम से लेकर खाँसी, एलर्जी, दमा, जोड़ों का दर्द, त्वचा का रूखापन और कई बार मौसम से प्रभावित मानसिक समस्याएँ भी सामने आती हैं। ऐसे में जरुरी है कि हम अपने आहार, जीवनशैली और स्वास्थ्य आदतों को सर्दियों के अनुरूप ढालें ताकि हम पूरे मौसम में स्वस्थ, ऊर्जावान और खुशहाल बने रहें।

सर्दियों में भोजन का चयन खास महत्व रखता है। कम तापमान के कारण शरीर को अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है, इसलिए इस मौसम में ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन करना चाहिए जो शरीर को गर्माहट दें और प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाएँ। गुड़, तिल, मूंगफली, बादाम, अखरोट, काजू जैसे सूखे मेवे पोषण का खजाना हैं। वहीं, हरी पत्तेदार सब्जियाँ जैसे सरसों, पालक, मेथी, और मौसमी सब्जियाँ जैसे गाजर, चुकंदर, मूली, शकरकंद आदि शरीर को विटामिन, आयरन और फाइबर प्रदान करती हैं। देसी घी, बाजरे की रोटी, दलिया, मूंग की दाल का सूप और हल्दी वाले दूध का सेवन पाचन को मजबूत बनाता है और शरीर की गर्मी बनाए रखता है। अदरक, लहसुन, हल्दी और दालचीनी जैसी प्राकृतिक औषधियों का उपयोग संक्रमण से बचाता है और शरीर को भीतर से मजबूत करता है।

सर्दियों में पानी कम पीने की प्रवृत्ति भी स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। प्यास कम लगने के बावजूद शरीर को नमी की उतनी ही आवश्यकता होती है। पानी की कमी त्वचा को रूखा बनाती है और शरीर की ऊर्जा को प्रभावित करती है। इसलिए दिनभर 6–8 गिलास पानी अवश्य पीना चाहिए। साथ ही, गुनगुना पानी, हर्बल चाय, सूप, काढ़ा और अदरक–शहद की चाय जैसे पेय शरीर को तरोताज़ा रखते हैं और सर्दी-जुकाम से बचाते हैं।

त्वचा की देखभाल भी सर्दियों में अत्यंत महत्वपूर्ण

हो जाती है। ठंडी हवा त्वचा की प्राकृतिक नमी को सोख लेती है, जिससे त्वचा पर रूखापन, खिंचाव, खुजली और फटने जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। स्नान के तुरंत बाद मॉइस्चराइज़र लगाना त्वचा को सुरक्षित रखने का बेहतरीन तरीका है। चेहरे के साथ-साथ हाथ, पैर, कोहनियाँ और होंठों की देखभाल पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए। नारियल, बादाम और जैतून के तेल से मालिश त्वचा को मुलायम बनाए रखती है और रक्तसंचार को बढ़ाती है।

ठंड का मौसम लोगों को कम सक्रिय कर देता है। बिस्तर छोड़ना कठिन लगता है और व्यायाम के प्रति मन में आलस घर कर लेता है। लेकिन यह मौसम शारीरिक गतिविधियों का सबसे अच्छा समय माना जाता है। व्यायाम शरीर में गर्माहट उत्पन्न करता है, रक्त संचार बढ़ाता है और प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाता है। योग, प्राणायाम, हल्की दौड़, तेज़ चलना, स्ट्रेचिंग और सूर्य नमस्कार सर्दियों के लिए सबसे उपयुक्त माने जाते हैं। इसके साथ ही सुबह बाहर जाते समय कान, सिर, गर्दन और हाथों को ढककर चलना चाहिए ताकि ठंडी हवा से बचा जा सके।

सर्दियों में संक्रमण का खतरा भी अधिक रहता है। वायरस और बैक्टीरिया तेजी से फैलते हैं, इसलिए स्वच्छता बेहद जरूरी है। नियमित रूप से हाथ धोना, घर में ताज़ी हवा आने देना और भीड़भाड़ वाले स्थानों में मास्क पहनना संक्रमण से बचाता है। यदि खाँसी-जुकाम हो जाए तो भाप लेना, हल्दी वाला दूध पीना, तुलसी-अदरक की चाय और विटामिन–सी युक्त फल जैसे संतरा, नींबू, अमरूद और आँवला का सेवन रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।

सर्दियों में धूप का महत्व बहुत अधिक होता है। यह विटामिन–डी का प्रमुख स्रोत है, जो हड्डियों और दाँतों को मजबूत बनाता है। धूप लेने से शरीर में गर्माहट आती है और मन भी प्रसन्न रहता है। रोजाना 15–20 मिनट धूप में बैठने की आदत स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है।

नींद भी इस मौसम में स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण आधार है। ठंड में शरीर अधिक आराम चाहता है, इसलिए 7–8 घंटे की गहरी नींद लेना जरूरी है। पर्याप्त नींद शरीर की ऊर्जा को पुनर्स्थापित करती है और मानसिक तनाव को कम करती है।

बुजुर्गों और बच्चों के लिए सर्दियाँ विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण होती हैं। बुजुर्गों में जोड़ों का दर्द, गठिया

और उच्च रक्तचाप जैसी समस्याएँ बढ़ जाती हैं, जबकि बच्चों की प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होने के कारण उन्हें जल्दी सर्दी-जुकाम हो जाता है। इसलिए दोनों आयु वर्गों की देखभाल पर विशेष ध्यान रखना चाहिए। उन्हें गर्म कपड़े पहनाना, पौष्टिक खाना देना और संक्रमण से बचाना आवश्यक है।

अंततः, सर्दियों की चमक, मिठास और सौम्यता तभी आनंद देती है जब हम अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें। स्वस्थ आहार, पर्याप्त पानी, नियमित व्यायाम, उचित त्वचा देखभाल, धूप, नींद और स्वच्छता—ये सभी घटक एक मजबूत और स्वस्थ जीवन का आधार बनाते हैं। थोड़ी-सी सावधानी और सही आदतें अपनाकर हम इस ठंडे मौसम को न केवल आरामदायक बल्कि स्वास्थ्य-वर्धक भी बना सकते हैं। सर्दियों का हर पल आनंददायक हो, बस यही कामना है।

वंदना शर्मा
प्रबंधक
न्यू अनाज मंडी

हरियाणा का पारंपरिक व्यंजनः बाजरे की खिचड़ी

हरियाणा की मिट्टी और देसी भोजन की खुशबू का असली अनुभव बाजरे की खिचड़ी में मिलता है। यह व्यंजन न केवल स्वाद में लाजवाब है, बल्कि सर्दियों में शरीर को गर्माहट, ऊर्जा और शक्ति देने वाला पौष्टिक विकल्प भी है। बाजरा अपने भीतर कैल्शियम, आयरन और फाइबर भरपूर मात्रा में रखता है, जिससे यह स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होता है। ग्रामीण इलाकों में इसे अक्सर देशी घी और छाछ के साथ परोसा जाता है, जिससे इसका स्वाद और भी बढ़ जाता है।

सर्दियों में बाजरे की खिचड़ी का सेवन शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है और पाचन तंत्र को भी मजबूत करता है। यह व्यंजन हल्का, सुपाच्य और ऊर्जा से भरपूर होने के कारण बच्चों, बुजुर्गों और सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए उपयुक्त है।

आवश्यक सामग्री

- बाजरा – 1 कप
- मूंग दाल (छिलका रहित) – ½ कप
- पानी – 4–5 कप (जरूरत अनुसार)
- देशी घी – 2–3 बड़े चम्मच
- जीरा – 1 छोटा चम्मच
- हींग – 1 चुटकी
- हल्दी – ½ छोटा चम्मच
- नमक – स्वादानुसार
- हरी मिर्च – 1 बारीक कटी
- अदरक – 1 छोटा टुकड़ा (कद्दूकस किया हुआ)

विधि

1. सबसे पहले बाजरे को अच्छे से साफ कर लें और हल्का सा मोटा-मोटा कूट लें ताकि दाने खुल जाएँ और पकने पर खिचड़ी का स्वाद बढ़े।

2. मूंग दाल को पानी से धोकर बाजरे के साथ मिलाएँ।

3. प्रेशर कुकर में बाजरा–दाल का मिश्रण डालें, साथ में हल्दी, नमक और 4–5 कप पानी डालें। मध्यम आँच पर 5–6 सीटी तक पकाएँ। खिचड़ी पक जाने पर कुकर खोलें और देखें कि खिचड़ी हल्की गाढ़ी और दाने एकसार हो गए हैं।

4. अब एक छोटे पैन में 2–3 बड़े चम्मच घी गर्म करें। इसमें जीरा, हींग, कटी हरी मिर्च और कद्दूकस किया हुआ अदरक डालकर हल्का भूनें। यह तड़का खिचड़ी में डालें और धीरे-धीरे मिलाएँ ताकि खिचड़ी में सभी मसालों का स्वाद अच्छे से समा जाए।

5. चाहें तो ऊपर से थोड़ा और घी डालकर गरमा-गरम परोसें।

परोसने का तरीका

बाजरे की खिचड़ी को देशी घी और छाछ के साथ परोसने पर इसका स्वाद और भी बढ़ जाता है। इसे सर्दियों में नाश्ते या दोपहर के भोजन के रूप में लिया जा सकता है। इसके साथ ताज़ी हरी मिर्च, अचार या सलाद भी रखा जा सकता है।

तन्वी
सहायक प्रबंधक
एसएमई और कृषि हब करनाल

पेड़ का आख़िरी गीत

वृक्ष अमर हो जाते हैं जब तूफ़ानों में झुक जाते हैं,
मानव काट-काटकर उनकी शाखाएँ घर ले जाते हैं।

पात बकरियों के हिस्से आए, कोमल कोंपल बच्चे खाएँ,
अपने अंडों और नन्हों संग पक्षी घोंसले छोड़ उड़ जाएँ।

दृष्टि गड़ाए बैठे लोग, आरा लेकर फिर आएँगे,
टुकड़ों-टुकड़ों में बाँट उसे कई दिशाओं में ले जाएँगे।

किसी का पलंग, किसी की कुर्सी मधुशाला की शान बने,
किसी के पशुओं का खूँटा, किसी की थाली पहचान बने।

जो पेड़ कभी छाया देता था, सबके प्राणों का रखवाला,
जीना उसने सिखला दिया, कितना सरल, कितना मतवाला।

उसके गिरने से समझ आया जीवन का गहरा सा भेद,
देते चलो, बाँटते चलो, यही है जीवन का वेद।

धरती को हरियाली लौटाएँ, फिर से बीज नए बो जाएँ,
पेड़ तो गिरकर भी सिखला गए, गिरकर भी कैसे अमर हो जाएँ।

राशि
सहायक प्रबंधक
शेरा शाखा

ज़िंदगी के पड़ाव

दायित्वों की गठरी ने झुकाया हर एक कंधा,
प्रेम का उजला सपना रह गया मन में ही बंधा।

रोज़ी-रोटी की होड़ में खुद को बेच आए,
मिडिल क्लास की गलियों में अरमान सब ठहर जाए।

सुबह उठे तो ज़िम्मेदारी, शाम को थकन का साथ,
हँसी कहीं पीछे छूट गई, रह गया बस दिन-रात।

दुखों के काँटों ने अक्सर घायल दिल को किया,
खुशियों का चाँद भी बादल ओढ़े चुपचाप रहा।

गिरे मगर टूटे नहीं, फिर हिम्मत से उठ आए,
हर ठोकर को सीख बनाकर आगे कदम बढ़ाए।

मौत भले आख़िर सच हो, जीवन फिर भी जीत,
उम्मीद, हौसले, सपनों से सजती रहती रीत।

अजय
वरिष्ठ प्रबंधक
भिवानी शाखा

बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट (बीसी) की समीक्षा बैठक

अंचल कार्यालय करनाल के बैठक कक्ष में अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह की अध्यक्षता में अंचल के सभी बिजनेस कॉरेस्पोंडेंट (बीसी) की एक महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य व्यवसाय संवर्धन गतिविधियों को और प्रभावी बनाना तथा विभिन्न वित्तीय समावेशन योजनाओं के क्रियान्वयन को सुदृढ़ करना था। बैठक में उपस्थित सभी बीसी प्रतिनिधियों ने शाखाओं के साथ अधिक सुदृढ़ सहयोग स्थापित करने, क्षेत्रीय आवश्यकताओं को

प्राथमिकता देने तथा बैंकिंग सेवाओं को अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए संगठित प्रयास करने पर बल दिया।

बैठक के दौरान यह विशेष रूप से चर्चा का विषय रहा कि बीसी मॉडल बैंक की नीतियों और योजनाओं को जमीनी स्तर तक पहुँचाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए शाखा एवं बीसी के बीच तालमेल बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है। इस दिशा में, अंचल प्रमुख ने प्रत्येक बीसी को अपने-अपने क्षेत्रों में सक्रिय रूप से व्यवसाय की संभावनाएँ तलाशने तथा नए खातों, पीएमजेडीवाई, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, डिजिटल बैंकिंग सेवाओं और ऋण योजनाओं के विस्तार पर ध्यान केंद्रित करने के निर्देश दिए।

वित्तीय समावेशन योजनाओं में जनसुरक्षा अर्थात प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना एवं अटल पेंशन योजना की प्रगति पर विशेष रूप से समीक्षा की गई। बैठक में यह उल्लेख किया गया कि ये योजनाएँ न केवल समाज के कमजोर वर्गों को सुरक्षा प्रदान करती हैं, बल्कि बैंक द्वारा सामाजिक उत्तरदायित्व को निभाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान भी देती हैं। इस अवसर पर सभी बीसी प्रतिनिधियों ने जनसुरक्षा योजनाओं के निर्धारित लक्ष्यों को समयबद्ध रूप से प्राप्त करने का संकल्प लिया।

बैठक के अंत में, उपस्थित सभी बीसी प्रतिनिधियों ने संयुक्त रूप से यह आश्वासन दिया कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में योजनाओं के विस्तार, नए ग्राहकों को जोड़ने और बैंक की प्राथमिकताओं को पूर्ण करने के लिए सतत प्रयासरत रहेंगे। इस प्रतिबद्धता के साथ बैठक का समापन हुआ, जो अंचल के व्यवसाय संवर्धन तथा वित्तीय सशक्तिकरण की दिशा में और अधिक प्रभावी कदम साबित होगी।

शाखाओं द्वारा कासा कैंप के दौरान लिए गए चित्र

3 MONTH FINANCIAL INCLUSION SATURATION CAMPAIGN

यूको बैंक UCO BANK

यूको बैंक
3-MONTH FINANCIAL INCLUSION SATURATION CAMPAIGN

संसद
राष्ट्रपति
लोक सभा
सक्रियता
श्रेणी एवं
संबंधित धातुकर्म
विद्युत मोटर
यूको बैंक UCO BANK

शिक्षा ही जीवन के सुख का मूलभूत आधार है।

डिपॉज़िट मोबिलाइज़ेशन में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली शाखाएँ

कलानौर

भापरोड़

भिवानी

एलेनाबाद

हैबतपुर

फतेहाबाद

हांसी

हिसार

खरावर

डिपॉज़िट मोबिलाइज़ेशन में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली शाखाएँ

झज्ज़र

कलानवाली

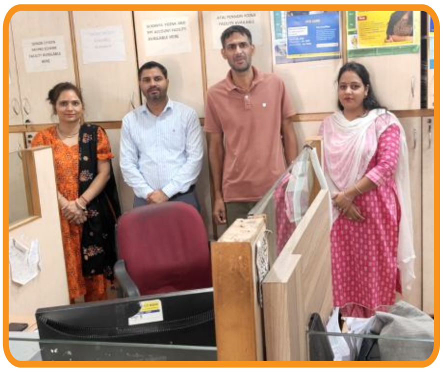

कनीना

रादौर

राई

रेवाड़ी

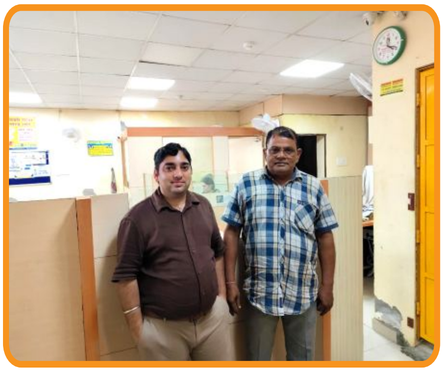

सैम्पल

सिरसा

यमुनानगर

“यूको बैंक करनाल द्वारा पानीपत में भव्य एक्सपोर्टर मीट का आयोजन निर्यातकों को मिली नई दिशा"

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल द्वारा 25 अगस्त को पानीपत में एक भव्य एक्सपोर्टर मीट का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्थानीय निर्यातकों को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, निर्यात ऋण सुविधाओं तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी देना एवं बैंकिंग सेवाओं से जोड़कर उनके व्यवसाय को नई दिशा प्रदान करना था।

इस अवसर पर यूको बैंक प्रधान कार्यालय से आदरणीय श्री मनीष कुमार, महाप्रबंधक उपस्थिति रहे। उन्होंने निर्यातकों को संबोधित करते हुए कहा कि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा लगातार बढ़ रही है, ऐसे में बैंकों और निर्यातकों के बीच समन्वय एवं सहयोग अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बैंक द्वारा उपलब्ध कराए जा रहे विभिन्न उत्पादों और सेवाओं पर विस्तार से चर्चा की तथा निर्यातकों से इन सुविधाओं का अधिकतम लाभ उठाने का आग्रह किया।

कार्यक्रम में यूको बैंक अंचल कार्यालय, करनाल के अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह भी उपस्थित रहे। उन्होंने क्षेत्र के निर्यातकों को यूको बैंक की प्राथमिकताओं से अवगत कराते हुए कहा कि बैंक सदैव उद्योग और व्यापार के सहयोग एवं विकास के लिए तत्पर है।

इस अवसर पर एक्सपोर्ट क्रेडिट गारंटी कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड पानीपत शाखा के शाखा प्रमुख श्री धनंजय कुमार झा बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। उन्होंने निर्यातकों को ईसीजीसी द्वारा दी जाने वाली बीमा और गारंटी योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा बताया कि इन योजनाओं का लाभ उठाकर निर्यातक अपने व्यवसाय को और सुरक्षित एवं सुदृढ़ बना सकते हैं।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय निर्यातकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और बैंक एवं ईसीजीसी अधिकारियों से अपने सवाल साझा किए। निर्यातकों ने इस आयोजन की सराहना करते हुए इसे उपयोगी और ज्ञानवर्धक बताया। इस अवसर पर यूको बैंक के विभिन्न वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

एक्सपोर्टर मीट के दौरान लिए गए चित्र

संकल्प राजभाषा कार्ययोजना 2025 के अंतर्गत यूको जी. डी. बिड़ला व्याख्यानमाला का आयोजन

दिनांक 26 सितंबर 2025 को यूको बैंक, अंचल कार्यालय करनाल में संकल्प राजभाषा कार्ययोजना 2025 के अंतर्गत यूको जी. डी. बिड़ला व्याख्यानमाला का सफल और प्रभावी आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम न केवल राजभाषा हिंदी के संवर्द्धन और प्रसार के उद्देश्य को सुदृढ़ करता है, बल्कि बैंकिंग सेवाओं में हिंदी के व्यावहारिक अनुप्रयोग को मजबूत बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल भी है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट वक्ता के रूप में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित प्रोफेसर डॉ. नवीन बत्तरा को आमंत्रित किया गया। डॉ. बत्तरा ने "बैंकिंग युग में हिंदी की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता" विषय पर अत्यंत गहन, विचारोत्तेजक एवं प्रेरणादायी व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपने उद्बोधन में उन्होंने बदलते बैंकिंग परिदृश्य, डिजिटल माध्यमों की बढ़ती भूमिका और ग्राहक-सेवा में मातृभाषा एवं राजभाषा के महत्व को विस्तार से रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि हिंदी केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि ग्राहकों के साथ भरोसे का पुल भी है।

कार्यक्रम के दौरान अंचल कार्यालय के अधिकारीगण एवं कर्मचारी उपस्थित रहे और उन्होंने व्याख्यान को अत्यंत ध्यानपूर्वक सुना।

व्याख्यानमाला की अध्यक्षता अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह द्वारा की गई। अंचल प्रमुख ने अपने संबोधन में हिंदी के विस्तार, बैंकिंग में इसके सहज प्रयोग तथा कर्मचारी सहभागिता के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि यूको बैंक सदैव राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और उपयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध रहा है। संकल्प राजभाषा कार्ययोजना 2025 इसी प्रतिबद्धता को नए आयाम देने का एक सशक्त प्रयास है।

कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। यह आयोजन प्रतिभागियों के लिए ज्ञान, प्रेरणा और भाषा-संवर्धन का एक महत्वपूर्ण मंच साबित हुआ।

यूको जी. डी. बिड़ला व्याख्यानमाला

हिंदी दिवस 2025 के अवसर पर हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल द्वारा 14 से 28 सितंबर, 2025 तक "हिंदी पखवाड़ा – 2025" का आयोजन किया गया। 14 सितंबर को हिंदी दिवस के अवसर पर गाँधीनगर, गुजरात में माननीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी की गरिमामयी उपस्थिति में राष्ट्रीय स्तर का हिंदी दिवस समारोह आयोजित हुआ। इसी दिन अंचल कार्यालय करनाल में भी हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर यूको बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अश्विनी कुमार जी तथा माननीय गृह मंत्री जी के हिंदी दिवस संदेशों का वाचन किया गया। इसके पश्चात् कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सामूहिक रूप से यूको राजभाषा प्रतिज्ञा ग्रहण की और बैंकिंग कार्यों में हिंदी के अधिकतम प्रयोग का संकल्प लिया।

पखवाड़े की अवधि में राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता, कविता-पाठ प्रतियोगिता, निबंध लेखन, चित्र देखो–कहानी लिखो एवं हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं ने कर्मचारियों की रचनात्मकता और भाषायी दक्षता को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया।

प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त हिंदी कार्यशाला तथा यूको जी. डी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला का भी आयोजन किया गया। इस व्याख्यानमाला में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रख्यात विद्वान डॉ. नवीन बत्रा ने "बैंकिंग युग में हिंदी की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता" विषय पर विचार व्यक्त किए। हिंदी पखवाड़ा के समापन पर प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान लिए गए चित्र

अंचल कार्यालय करनाल द्वारा "बालों की देखभाल" पर जागरूकता कार्यक्रम

यूको बैंक अंचल कार्यालय, करनाल द्वारा दिनांक 23 मई 2025 को एक विशेष स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम आधुनिक जीवनशैली के एक महत्वपूर्ण पहलू — "बालों की देखभाल" पर केंद्रित था, जिसका उद्देश्य कर्मचारियों को बाल संबंधी समस्याओं और उनके समाधान के प्रति जागरूक करना था।

इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में प्रख्यात त्वचा एवं बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. रोहित जिंदल को आमंत्रित किया गया। डॉ. जिंदल ने अपने अनुभव और विशेषज्ञता के आधार पर बाल झड़ना, बालों का पतला होना, कम उम्र में सफेद होना, रूसी, और स्कैल्प की देखभाल जैसे विषयों पर अत्यंत ही सरल एवं वैज्ञानिक ढंग से विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उनके व्याख्यान ने उपस्थित स्टाफ सदस्यों को न केवल ज्ञानवर्धक जानकारियाँ प्रदान की, बल्कि उन्हें व्यक्तिगत रूप से लाभकारी उपाय भी बताए।

कार्यक्रम में अंचल कार्यालय, करनाल, रिटेल एवं एमएसएमई विभाग के सभी स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे। इसके साथ ही करनाल अंचल की विभिन्न शाखाओं के अनेक स्टाफ सदस्य ऑनलाइन माध्यम से इस सत्र से जुड़कर लाभान्वित हुए।

डॉ. रोहित जिंदल ने कर्मचारियों की ओर से पूछे गए विभिन्न प्रश्नों का विस्तृत, व्यावहारिक एवं वैज्ञानिक उत्तर देकर उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। कुछ प्रमुख विषय जैसे कि तनाव के कारण बाल झड़ना, खानपान का बालों पर प्रभाव, बाजार में उपलब्ध उत्पादों की प्रभावशीलता तथा घरेलू उपचारों की उपयोगिता पर विशेष चर्चा हुई।

कई कर्मचारियों ने व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए डॉ. जिंदल से सलाह भी ली, जिससे यह सत्र प्रशिक्षण और परामर्श दोनों का समावेश बन गया।

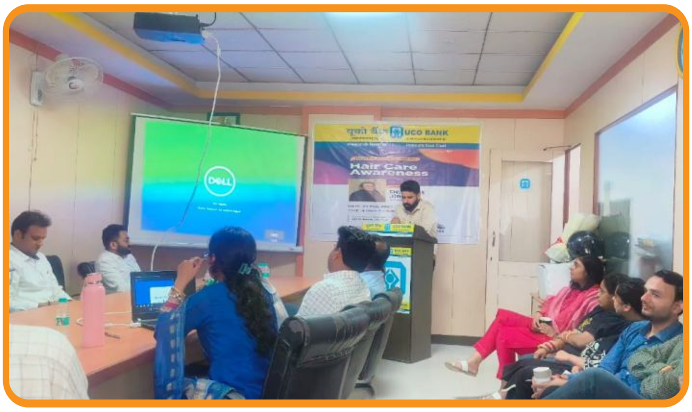

अंचल कार्यालय में जन्मदिवस

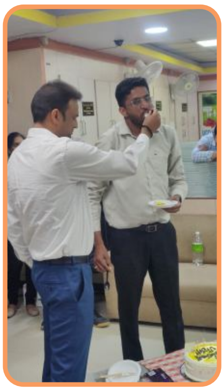

विजय कुमार
प्रबंधक

सनी सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक

राधिका नागपाल
प्रबंधक

दीपक चोपड़ा
प्रबंधक

अंकुश दुरेजा
वरिष्ठ प्रबंधक

हेमा भाटिया
वरिष्ठ प्रबंधक

चन्दन कुमार चौधरी
मुख्य प्रबंधक

दीपक रामरैणा
वरिष्ठ प्रबंधक

रविंदर कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक

यशपाल कुमार बराक
प्रबंधक

कृष्ण कांत
प्रबंधक

गौरव गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक

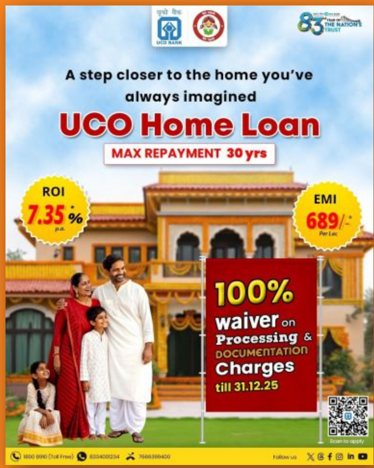

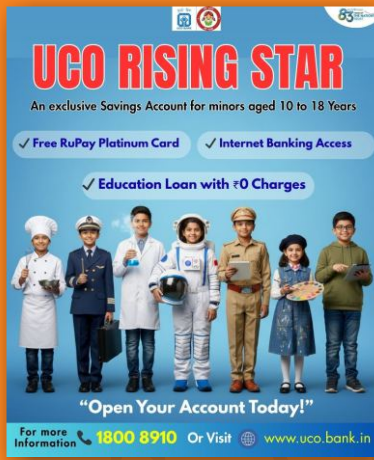

यूको बैंक — **UCO BANK**

(भारत सरकार का उपक्रम) — (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का — Honours Your Trust

अंचल कार्यालय, करनाल

अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।

- भारतेंदु हरिश्चंद्र

यूको बैंक अंचल कार्यालय, दुर्गा मन्दिर परिसर के अन्दर, जी.टी. रोड, करनाल-132001 (हरियाणा)